नई सोच, नया आयाम

जोहार छत्तीसगढ़

RNI No. CHHHIN/2009/35020

दैनिक हिन्दी

◆ वर्ष: -14 ◆ अंक: 190 डाक पंजीयन 030/रायगढ़/2015-2017 ◆ मूल्य: 3 ₹ ◆ पृष्ठ : 8 (4+4)

धरमजयगढ़, मंगलवार 17 मई 2022

JOHAR CHHATTISGARH epaper for login www.joharchhattisgarh.in

पेज -3 पर

पंचुराम बने सर्व धोबी समाज के अध्यक्ष
सौहार्द, एकता और भाईचारा ...

कु. रोशनी कश्यप ने
5 वां स्थान प्राप्त किया

पेज -8 पर

एक नजर

मंदिर-मस्जिद विवाद पर बॉलीवुड सिंगर लकी अली का रिएक्शन

रायपुर में बोले-देश एक फूल की तरह, हम लड़ते रहे तो ये मुरझा जाएगा

रायपुर। देश में इन दिनों मंदिर-मस्जिद का विवाद काफी जोरों पर है। जगह-जगह कई तरह की बयानबाजी और बवाल सामने आते ही रहते हैं। दोनों पक्षों को लेकर कई तरह की विचारधाराएं देखने को मिलती हैं। वहीं बॉलीवुड और साउथ इंडस्ट्री में भी बयानबाजी चल रही है। इन सबके बीच बॉलीवुड सिंगर और 90 के दशक में हिट पॉप सॉन्ग देने वाले सिंगर लकी अली ने अपनी बात कही। रायपुर में आयोजित म्यूजिकल फेस्ट में शामिल होने आए लकी अली ने दैनिक भास्कर को दिए इंटरव्यू में कई दिलचस्प बातें साझा कीं।

करंट लगने से बिजली खंबे से गिरकर लाइनमैन की हुई मौत

कांकेर । कोतवाली थाना क्षेत्र शीतलापारा में बीती रात पोल पर चढ़कर काम कर रहे एक लाइनमैन की रिवर्स करंट के चपेट में आने से दर्दनाक मौत हो गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार लाइन मैन सुबह से शाम तक अलग-अलग पोल पर चढ़कर लाइन दुरूस्त करने में लगा था। इसी दौरान देर शाम करीब 7.30 बजे करंट के चपेट में आने से वह बिजली खंबे से नीचे गिर गया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

कांग्रेस के लोग नामर्द हैं, कांग्रेसी बोले- सत्ता जाने से अभद्र और अशिष्ट हो गए- बृजमोहन

रायपुर। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में जेल भरो आंदोलन के दौरान भाजपा के वरिष्ठ नेता, पूर्व मंत्री व विधायक बृजमोहन अग्रवाल ने मीडिया को ऐसा बयान दिया, जिससे कांग्रेसियों में भारी आक्रोश है। दरअसल, भूपेश बघेल सरकार पर हमला बोलने के दौरान नेताजी की जुबान फिसल गई। बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि कांग्रेस के लोग निकम्मे हैं, कांग्रेस के लोग नामर्द हैं। जरा ऐसे कानून की कॉपी लेकर आए, कौन से राज्य में लागू है। बृजमोहन अग्रवाल के बयान के बाद प्रदेश में नया सियासी बखेड़ा खड़ा होता दिख रहा है। आंदोलन की अनुमति के कानून को रद्द करने सोमवार को प्रदेशभर में विपक्षी पार्टी भाजपा ने आंदोलन किया। इस दौरान सरकार के खिलाफ नारेबाजी, प्रदर्शन और बयानबाजी तक तो ठीक रहा, लेकिन बृजमोहन अग्रवाल द्वारा कांग्रेस के लोगों के लिए नामर्द जैसे शब्दों के प्रयोग से कांग्रेसियों का आक्रोश भड़क गया है। आंदोलन के दौरान पूर्व मंत्री ऐसा बोल गए जो अब कांग्रेसियों को रास नहीं आ रहा। कांग्रेस के नेताओं ने इस बयान की निंदा की है। कांग्रेस के प्रदेश प्रवक्ता ने बृजमोहन अग्रवाल व भाजपा को अपशब्दों के लिए माफी मांगने को कहा है। रायपुर में आंदोलन का नेतृत्व कर रहे बृजमोहन अग्रवाल को पुलिस ने गिरफ्तार कर बस में बैठा दिया। इस बीच मीडिया से बात करते हुए बृजमोहन अग्रवाल ने कहा- ये कांग्रेस के लोग निकम्मे हैं, कांग्रेस के लोग नामर्द हैं। छत्तीसगढ़ में धरना, आंदोलन या जुलूस के लिए जिस प्रकार कानून बनाया गया है, ऐसा किसी और राज्य में नहीं है। बृजमोहन ने आगे कहा कि ऐसे कानून कहां लागू है। कांग्रेस के नेता हमें आदेश दिखाएं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ अलग राज्य क्यों बना है, जो कानून दूसरे राज्यों में लागू हैं वो यहां भी लागू होंगे। छत्तीसगढ़ के अलावा दूसरे राज्यों में पीएम आवास बन रहे हैं। यहां पीएम आवास क्यों नहीं बन रहे। यहां लोगों को पट?टे क्यों नहीं मिल रहे, यहां घर-घर में नल क्यों नहीं पहुंच रहा। अन्य राज्यों की बात करते हैं तो अन्य राज्यों की बराबरी करें। 18 लाख लोगों की छत छिनने वाली कोई सरकार है

छत्तीसगढ़ में भाजपा का जेल भरो आंदोलन

भूपेश सरकार के खिलाफ नारेबाजी, प्रदेशभर में सड़क पर उतरे भाजपाई

रायपुर। छत्तीसगढ़ में आंदोलन की अनुमति को लेकर जारी सरकारी आदेश के खिलाफ भारतीय जनता पार्टी का सोमवार को प्रदेशभर में जेल भरो आंदोलन जारी है। रायपुर में प्रदर्शन के बाद पुलिस ने पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल व जिला अध्यक्ष श्रीचंद सुंदरानी सहित तीन हजार कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया है।

बृजमोहन काले गुब्बारे लेकर सेंट्रल जेल परिसर में बैठे हुए हैं। राजनांदगांव में पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह ने भूपेश सरकार के खिलाफ आवाज बुलंद की। रायपुर में जेल परिसर में भाजपाई हनुमान चालीसा पढ़ने लगे। प्रदेश के अधिकांश जिलों में प्रदर्शन के दौरान पुलिस से झूमा-झटकी भी हुई है। प्रदेश के सभी जिलों में हजारों की संख्या में भाजपाईयों ने गिरफ्तारी दी। छत्तीसगढ़ में धरना-प्रदर्शन को लेकर जारी सरकारी आदेश के खिलाफ भाजपा का प्रदेशभर में जेल भरो आंदोलन जारी है। भीषण गर्मी के बीच भाजपा कार्यकर्ता और पदाधिकारी जिला मुख्यालय में प्रदर्शन कर रहे हैं। राजधानी रायपुर में 4 जगहों पर प्रदर्शन हुआ। रायपुर में पूर्व मंत्री बृजमोहन अग्रवाल के नेतृत्व में कार्यकर्ता कालीबाड़ी से सीएम हाउस जाने निकले। पुलिस ने जगह-जगह बैरिकेड्स लगाकर उन्हें रोका और फिर गिरफ्तार कर जेल ले गई।

राजनांदगांव में पूर्व सीएम डॉ. के नेतृत्व में आंदोलन हुआ। वहीं बिलासपुर में नेता प्रतिपक्ष धरमलाल कौशिक व बस्तर संभाग मुख्यालय में पूर्व मंत्री केदार कश्यप के नेतृत्व में जेल भरो आंदोलन किया गया। सभी जगहों पर पुलिस की चाक-चौबंद व्यवस्था रही। कार्यकर्ताओं की पुलिस से नोंकझोंक भी हुई।

जन आक्रोश को कुचलना चाहती है भूपेश सरकार

पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह व भाजपा प्रदेश अध्यक्ष विष्णुदेव साय ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के नेतृत्व वाली सरकार इतनी भयभीत हैं कि अपने खिलाफ उठ रही आवाज को दबाना चाहती हैं। जन आक्रोश को कुचलना चाहती हैं। छत्तीसगढ़ियों के अभिव्यक्ति की आजादी को छीनना चाहती है। छत्तीसगढ़ में धरना-प्रदर्शन, आंदोलन पर रोक लगाने कानून लाया गया है। कांग्रेस सरकार द्वारा मिनी काला कानून लाकर छत्तीसगढ़ में आपातकाल की यादों को ताजा करने का कृत्य किया जा रहा हैं। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ में तानाशाही चलाने वाली सरकार की जेल भाजपा के इस आंदोलन के सामने छोटी पड़ेगी।

नक्सलियों के नापाक मंसूबे नाकाम

एल्मागुंडा कैंप के पास मिला शक्तिशाली बम, कोबरा जवानों ने विस्फोट कर उड़ाया

सुकमा। छत्तीसगढ़ के नक्सल प्रभावित सुकमा जिले में फोर्स के जवानों ने लाल आतंक के नापाक मंसूबों को नाकाम कर दिया। सर्चिंग पर निकले कोबरा बटालियन के जवानों ने शक्तिशाली मोर्टार एचई बम बरामद किया है। इस शक्तिशाली बम को बीडीएस की टीम को ब्लास्ट कर दिया। बम इतना शक्तिशाली था कि जवान चपेट में आते तो बड़ा नुकसान हो जाता। पुलिस अफसरों के मुताबिक फिलहाल जवान मौके पर ही मौजूद हैं और आसपास के क्षेत्र की भी डीमाइनिंग कर रहे हैं।

मिली जानकारी के मुताबिक सुकमा जिले में कोबरा 206 बटालियन की डी कंपनी ने बम को बरामद किया है। जवान सर्चिंग पर एल्मागुड़ा कैंप से निकले थे। जवानों को नुकसान पहुंचाने की नीयत से नक्सलियों ने एल्मागुड़ा कैंप से 450 मीटर की दूरी पर बम को प्लांट किया था। कोबरा बटालियन की टीम ने मोर्टार एचई बम को ब्लास्ट कर निष्क्रिय कर दिया। पुलिस अफसरों के मुताबिक माओवादी अब जवानों को निशाना बनाने ज्यादा से ज्यादा आईईडी व प्रेशर बम का इस्तेमाल करने लगे हैं। बता दें कि 2 दिन पहले बीजापुर के नेलसनार में सीएएफ की 8वीं वाहिनी की कंपनी में तैनात जवान रामनाथ मौर्य बम ब्लास्ट से घायल हुआ था। एरिया डोमिनेशन के दौरान बंगोली घाट के पास माओवादियों ने पहले से आईईडी बम लगा रखा था, जिस पर पैर पड़ते ही वह ब्लास्ट हो गया।

जमीन विवाद में व्यापारी की बेरहमी से हत्या

पहले सिर पर किया वार फिर गले में घुसा दिया सब्बल, दंपति गिरफ्तार

रायपुर। छत्तीसगढ़ के धमतरी जिले में जमीन विवाद को लेकर एक दंपति ने व्यापारी की बेरहमी से हत्या कर दी। पति-पत्नी ने व्यापारी के सिर पर सब्बल से वार कर दिया। वार इतना जोरदात था कि व्यापारी का सिर फट गया। दंपति ने सब्बल को व्यापारी के गले में घुसा दिया। हत्या के बाद शव गांव के चौक पर पड़ा हुआ था। सूचना पर पहुंची पुलिस ने आरोपी दंपति को गिरफ्तार कर लिया है। घटना जमीन विवाद से संबंधित है। वहीं घटना के बाद व्यापारियों में भारी आक्रोश है। व्यापारियों ने दुकानें भी बंद रखी।

अर्जुनी थाना प्रभारी गगन बाजपेयी ने बताया कि शांति नगर कॉलोनी निवासी राजेंद्र पारख (58 वर्ष) की शहर से लगे ग्राम अमेठी में मंच के पास जमीन है। इस जमीन पर अतिक्रमण को लेकर व्यापारी का फिरंगी निर्मलकर नाम के व्यक्ति के साथ विवाद चल रहा था। रविवार की रात व्यापारी गांव गया था, जहां अतिक्रमण को लेकर पड़ोसी से विवाद हो गया था।

जमीन विवाद के चलते व्यापारी की सब्बल मारकर हत्या

धमतरी । जमीन विवाद को लेकर ग्राम अमेठी में एक व्यापारी की सब्बल मारकर हत्या कर दी गई। इस घटना के बाद गांव में सनसनी फैल गई। घटना के विरोध में शहर के व्यापारियों ने आरोपियों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है । पुलिस के मुताबिक सोमवार को यह घटना सुबह करीब 10 बजे की है । शहर के निकट ग्राम अमेठी में उस समय सनसनी फैल गई जब शहर के मैत्री विहार कॉलोनी निवासी गवर्नमेंट सप्लायर राजेंद्र पार्क (55) पिता स्वर्गीय घेवरचंद ग्राम अमेठी में स्थित अपनी जमीन पर काम कराने के लिए गया था ।

दो ट्रकों के बीच भिड़ंत, हादसे के बाद तड़प रहे थे चालक व हेल्पर, मदद के बजाय प्याज लूटती रही भीड़

रायपुर। छत्तीसगढ़ के बेमेतरा जिले में हाईवे पर भीड़ का अमानवीय चेहरा देखने को मिला। रायपुर-कवर्धा नेशनल हाईवे पर बेमेतरा के पास सोमवार सुबह बड़ा हादसा हो गया।

प्याज व सीमेंट लदी दो ट्रकों के बीच भिड़ंत हो गई। हादसे में एक ट्रक चालक का सिर धड़ से अलग हो गया। वहीं दूसरे ट्रक का चालक व दो हेल्पर घायल होकर सड़क पर तड़प रहे थे। हादसे के बाद भीड़ जुटी, लेकिन किसी ने घायलों की सुध नहीं ली और प्याज लूटना शुरू कर दिया।

बेमेतरा के सिटी कोतवाली थाना क्षेत्र के हाईवे पर एक प्याज से भरी ट्रक और सीमेंट लदी ट्रक में टक्कर हो गई। हादसे में एक ट्रक चालक की मौके पर ही मौत हो गई। ट्रक चालक का सिर धड़ से अलग हो गया। वहीं दूसरे ट्रक के ड्राइवर, हेल्पर सहित 3 लोग घायल हो गए। घटना की जानकारी मिलने के बाद पुलिस मौके पर पहुंची। घायलों को जिला अस्पताल भिजवाया और शव को ट्रक से निकालकर मरच्यूरी भिजवाया गया। हादसे के बाद बेमेतरा के लोगों को अमानवीय चेहरा देखने को मिला। हादसे के बाद घायलों की मदद करने के बजाय लोग प्याज लूटते नजर आए।

पुलिस ने घायलों को भिजवाया अस्पताल

हाईवे में टक्कर के बाद प्याज से लदी ट्रक सड़क पर पलट गई और प्याज की बारियों बिखर गई। ट्रक में ड्राइवर व हेल्पर फंसे थे। घायल तड़प रहे थे और दूसरे ट्रक में चालक का शव भी फंसा हुआ था। घायलों को अस्पताल भेजने में मदद करने के बजाय लोग प्याज लूटने में मस्त दिखे। भीड़ के हाथ जितना प्याज आया लोग लूटकर चलते बने।

आंदोलन... राज्य सरकार के काले कानून के खिलाफ आंदोलन

वरिष्ठ भाजपा नेताओं के साथ सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता गिरफ्तार

दुर्ग । छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा सार्वजनिक,धार्मिक व राजनीतिक कार्यक्रम(धरना, प्रदर्शन, रैली) के आयोजनों के अनुमति के लिए बनाए गए 19 बिंदुओं के नए नियम को भाजपा ने काला कानून करार दिया है। जिसके विरोध में दुर्ग जिला के वरिष्ठ भाजपा नेता व कार्यकर्त्ता मानस भवन परिसर में जुटे। यहां जिला भाजपा द्वारा सभा का आयोजन किया गया।

सभा को सांसद विजय बघेल,पूर्व मंत्री प्रेमप्रकाश पांडेय, रमशीला साहू,विधायक विद्यारतन भसीन,भाजपा नेता राकेश पांडेय,वीरेन्द्र साहू,सांवलाराम डहरे,प्रदेश भाजपा मंत्री उषा टावरी,पूर्व महापौर चंद्रिका चंद्राकर,माया बेलचंदन,जागेश्वर साहू के अलावा वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने संबोधित करते हुए राज्य सरकार के नए नियम को काला कानून बताते हुए इसे लोकतंत्र का हनन कहकर जोरदार विरोध दर्ज करवाया। सभा का संचालन जिला भाजपा उपाध्यक्ष संतोष सोनी व जिला भाजपा मंत्री दिनेश देवांगन ने किया। सभा उपरांत वरिष्ठ भाजपा नेताओं के साथ कार्यकर्त्ता अपनी मांगो को लेकर ज्ञापन सौंपने कलेक्ट्रेट की ओर कुच किए। जिससे हरकत में आई पुलिस बल ने प्रदर्शनकारी भाजपाईयों को

मानस भवन के पास ही रोक लिया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने भूपेश बघेल सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी करते हुए सैकड़ों की संख्या में गिरफ्तारी दी। गिरफ्तार भाजपा नेताओं व कार्यकर्त्ताओं को पं. रविशंकर स्टेडियम के अस्थायी जेल में लाया गया। जहां उनकी गिरफ्तारी की प्रक्रिया जारी है। पं रविशंकर स्टेडियम में जुटे भाजपा कार्यकत्ताओं के भीड़ मद्देनजर राज्य सरकार के काले कानून के विरोध में सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं की गिरफ्तारी सुनिश्चित मानी जा रही है।भाजपा के जेल भरो आंदोलन को लेकर जिला पुलिस सोमवार को सुबह से ही अलर्ट रही।

खाद्य मंत्री ने किया बायोडायवर्सिटी पार्क का उद्घाटन

रायपुर। छत्तीसगढ़ शासन के खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री श्री अमरजीत भगत ने सोमवार को बायोडायवर्सिटी पार्क का उद्घाटन फीता काटकर किया। मैनपाट विकासखंड के ग्राम पंचायत रोपाखर में वन विभाग द्वारा करीब एक करोड़ रुपये की लागत से बायोडायवर्सिटी पार्क विकसित किया जा रहा है। खाद्य मंत्री ने जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियां सहित पार्क का अवलोकन किया और पौधे भी रोपे। खाद्य मंत्री ने इस अवसर पर कहा कि मैनपाट में पर्यटन को बढ़ावा देने की कड़ी में बायोडायवर्सिटी पार्क भी जुड़ गया है। हमारी सरकार पर्यटन और सांस्कृति के क्षेत्र में निरंतर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि इस पार्क में पर्यटकों को प्रकृति के विविध रूप देखने को मिलेगी। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि पार्क को शासन की मंशानुरूप विकसित करें। पर्यटकों की सुविधा का भी ध्यान रखे। अधिकारियों ने बताया कि ग्राम पंचायत रोपाखार में वन विभाग द्वारा 1 करोड़ की लागत से 100 हेक्टेयर क्षेत्रफल में बायोडायवर्सिटी पार्क विकसित की जा रही है। 1-1 हेक्टेयर क्षेत्र में कैक्टस एवं बैम्बू पौधे तथा करीब 2 हेक्टेयर में औषधि पौधे लगाए जाएंगे।

परिवार संस्कार है, आज स्वार्थ और व्यक्तिवाद इस पर हावी

भौतिकता के बाजार में सब कुछ उपलब्ध है और उसे पैसे द्वारा खरीदा जा सकता है, पर क्या बहन का पवित्र स्नेह, मां की ममता, पिता का वात्सल्य, पत्नी का प्यार कीमत देकर खरीदा जा सकता है, कदापि नहीं। विश्व भर में कोई संगठन, कंपनी ऐसी नहीं है, जो इसका व्यापार करती हो। परिवार नाम की संस्था ही एकमात्र ऐसी संस्था है, जहां यह मिल सकता है।

पति-पत्नी, पिता-पुत्र, मां-बेटी, भाई-बहन आदि के सुमधुर संबंध मानव परिवार में ही दिखाई देते हैं। संसार में जितने भी जीव हैं, उनमें परिवार नाम की संस्था केवल मनुष्यों को ही मिली है, जो जीवनपर्यंत संबंधों की स्थिरता और प्रगाढ़ता को बनाए रखती है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री हेलेन बोसा ने अपनी पुस्तक द फैमिली में लिखा है कि %संसार बिना परिवार के उसी प्रकार होगा, जैसे सूर्य बादल से ढक सकता है किंतु उसकी आभा कभी खत्म नहीं हो सकती। वैसे ही कुटुंब-व्यवस्था की दीवार कोई अपने आचरण से हिला तो सकता है, परंतु उसका महत्व कभी कम नहीं होगा।

परिवार परिष्कार है, संस्कार है, कुरीतियों का परिमार्जन है, परमात्मा की प्राप्ति का साधन है, इसलिए परिवार जैसी कोई संस्था अभी तक न बनी है और न बन पाएगी। परिवार की आवश्यकता इसलिए पड़ी कि पेट और प्रजनन की जरूरत पूरी कर लेने के बाद भी व्यक्ति की दृष्टि में वास्तविक विकास नहीं आ पाता, इसलिए वह व्यवस्था और सृष्टि क्रम चलाने के लिए एक संस्था की तरफ जाता है, और वह संस्था परिवार है। परिवार पालना है, जिसमें सीखने, अनुभव प्राप्त करने और प्रवीणता प्राप्त करने की प्राथमिक ट्रेनिंग होती है। संस्कारों और व्यक्तित्व के विकास का बीजारोपण परिवार रूपी संस्था में ही होता है। सही मायने में व्यक्ति के व्यक्तित्व का बीज परिवार रूपी संस्था ही अपनी नर्सरी में तैयार करती है, इसलिए हमें परिवारों को सुगठित और सुरक्षित बनाने के लिए कुछ न कुछ परिवार के बारे में जानकारी अवश्य करनी चाहिए।

संस्कारों और व्यक्तित्व के विकास का बीजारोपण परिवार रूपी संस्था में होता है। व्यक्तित्व का बीज परिवार रूपी संस्था ही अपनी नर्सरी में तैयार करती है।

आज के इस परिवेश में जब परिवार में स्वार्थ, व्यक्तिवाद का गुण विकसित हो गया है, ऐसे में परिवार टूटा-सा जा रहा है। एक जमाना था कि परिवार संयुक्त पूजा, भोजन, संपत्ति, निवास, सामान्य धर्म और पारिवारिक दायित्वों से बंधा रहता था। यह हर प्रकार के परिवार में होता था, चाहे वह मातृवंशी परिवार हो या पितृवंशी परिवार।

सार्वभौमिकता और भावनात्मक आधार ने ही परिवार जैसी संस्था को संपूर्ण दुनिया में बनाए रखा है। संसाधनों से अगर सुख मिलना संभव होता, तो उसका उपयोग बहुत लोग कर लेते, लेकिन संसाधन अगर नीतियुक्त नहीं रहेगा, तो परिणाम अच्छा नहीं आएगा, इसलिए समृद्धि भी तभी फलदायक होगी, जब उसमें संस्कार होगा। परिवार इसी संस्कार को देने वाली संस्था है। प्रगति और समृद्धि की आकांक्षा प्रत्येक व्यक्ति का स्वाभाविक लक्षण है, इसकी पूर्ति हो। अर्थ उपार्जन करना भी विवेकशील लोगों का कर्तव्य है कि वे सभी मिल-जुल कर इस संदर्भ में सभी का सहयोग करें और सृजनात्मक गतिविधियों के आधार पर अच्छे परिवार का निर्माण करें। परिवार में घनिष्ठता व सहकारिता जितनी अधिक होगी, परिवार उतना ही अच्छा होगा। अतिरेक आवश्यकता और उपेक्षा रूपी विष से परिवार टूट जाता है। इसका हमेशा ध्यान रखना होगा कि परिवार में शालीनता के साथ स्नेह और संस्कार का वातावरण बने, संयुक्तप्रगति और समृद्धि का पथ प्रशस्त हो।

आरएन त्रिपाठी

संपादकीय

उथल-पुथल का अनंत दौर?

अगर महंगाई घटती, तो उससे सारी दुनिया राहत महसूस करती, क्योंकि तब शायद अमेरिकी फेडरल रिजर्व ब्याज दर बढ़ाने की अपनी नीति में कुछ ढिलाई दिखाता। लेकिन मुद्रास्फीति के ताजा आंकड़ों से यह जाहिर हुआ कि अब तक यह नीति महंगाई रोकने में नाकाम है। अमेरिका के अप्रैल के मुद्रास्फीति दर संबंधी आंकड़े पर दुनिया भर की नजर थी। खुद अमेरिका में इसका बेसब्री से इंतजार किया जा रहा था। अमेरिका के कई बाजार विशेषज्ञों ने कहा था कि वहां मुद्रास्फीति की दर मार्च में अपने चरम बिंदु पर पहुंच चुकी है। इसलिए अब इसमें गिरावट आने की शुरुआत होगी। अगर ऐसा होता, तो उससे सारी दुनिया राहत महसूस करती, क्योंकि तब शायद अमेरिकी सेंट्रल बैंक- फेडरल रिजर्व ब्याज दर बढ़ाने की अपनी नीति में कुछ ढिलाई दिखाता। इस नीति के कारण दुनिया भर के बाजारों में उथल-पुथल मची हुई है। बहरहाल, बुधवार को जब मुद्रास्फीति की आंकड़े जारी हुए, तो उससे यह जाहिर हुआ कि अब तक यह नीति महंगाई रोकने में नाकाम है। कुल मुद्रास्फीति दर में 0.3 प्रतिशत की और बढ़ोतरी हो गई। खास चिंता का पहलू यह सामने आया कि कोर इन्फ्लेशन में 0.6 प्रतिशत तक पहुंच गया। कोर इन्फ्लेशन में ईंधन और खाद्य पदार्थों की महंगाई दर को शामिल नहीं किया जाता है, क्योंकि इन दोनों चीजों के बाजार भाव को अस्थिर प्रकृति का माना जाता है। जबकि कोर इन्फ्लेशन बढ़ने का मतलब है कि महंगाई व्यापक रूप से बढ़ रही है। तो अब प्रश्न उठा है कि अमेरिकी नीति निर्माता क्या करेंगे? एक बात तो तय है कि वे ब्याज दरें बढ़ा कर बाजार में मुद्रा की उपलब्धता घटाने की उनकी नीति जारी रहेगी।

चिंतन के निहितार्थः कांग्रेस ने फिर खोया एक अवसर

उदयपुर में संपन्न हुए कांग्रेस के चिंतन शिविर को एक खोए हुए अवसर के रूप में जाना जाएगा। चाहे वह नेतृत्व का मुद्दा हो, बड़े सुधार हों, भावुक मुद्दे पर स्पष्टता की बात हो या फिर सबसे पुरानी पार्टी में आधुनिकता लाने का मसला हो, उदयपुर में इन सब पर विचार-विमर्श और निर्णय आधे-अधूरे तरीके से हुआ, जिनमें शर्तें तो थीं, लेकिन भरोसे का अभाव था। चिंतन शिविर में जी-23-यानी कांग्रेस के बागी गुट की खामोशी भी उतनी ही खटकने वाली थी।

अगस्त, 2020 से ही इस बागी गुट ने खुद की छवि मुखर सुधारवादी और परिवर्तन के आकांक्षी की बना रखी है। लेकिन देश भर से आए पार्टी के 430 नेताओं और प्रतिनिधियों के बीच ये चुप रहे। कपिल सिब्बल शिविर में मौजूद नहीं थे, पर 15 अगस्त, 2020 को पार्टी नेतृत्व को लिखी जिस चिट्ठी से हलचल मच गई थी, उस पर दस्तखत करने वालों में गुलाम नबी आजाद, आनंद शर्मा, मुकुल वासनिक, भूपिंदर सिंह हुड्डा, पृथ्वीराज चव्हाण, शशि थरूर, विवेक तनखा, मनीष तिवारी और दूसरे लोग शिविर में थे। लेकिन इन तमाम लोगों ने चुप्पी साधे रखी। हां, यह सुगबुगाहट जरूर थी कि इनमें से कुछ लोग राज्यसभा में जाना चाहते हैं। इसी कारण कभी प्रसिद्ध और अनुशासनप्रिय छवि वाले, लेकिन फिलहाल बेहद कमजोर हाई कमान को चिंतन शिविर में इन बागियों पर हावी होने में आसानी हुई। पार्टी नेतृत्व का बेहद महत्वपूर्ण मुद्दा अनुत्तरित रहा। शिविर में एकाधिक कांग्रेस नेताओं ने सार्वजनिक तौर पर राहुल गांधी को अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का 87वां अध्यक्ष चुने जाने की मांग की। हैरान करने वाली बात यह है कि अब तक जो नेता राहुल गांधी के नेतृत्व और उनके कामकाज के तौर-तरीके का विरोध कर रहे थे, उनमें से भी कुछ ने राहुल गांधी को अध्यक्ष बनाए जाने की मांग यह सोचकर की कि खुद गांधी परिवार की तरफ से इसका विरोध होगा। राहुल गांधी ने भी नेतृत्व की जिम्मेदारी संभालने की कोई इच्छाशक्ति नहीं दिखाई।

उदयपुर में संपन्न हुए चिंतन शिविर में राहुल गांधी ने नेतृत्व की जिम्मेदारी संभालने की कोई इच्छाशक्ति नहीं दिखाई। कांग्रेस ने हालांकि अपनी वैचारिकता से जुड़ी धुंध साफ करने की कोशिश

चिंतन शिविर में राहुल गांधी की देहभाषा कभी ऐसी लगी ही नहीं कि वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में वह कांग्रेस का नेतृत्व करने के इच्छुक हैं। हालांकि कुछ पार्टी नेताओं ने बेहद आश्वस्त अंदाज में कहा कि कांग्रेस में नेतृत्व के मुद्दे का निर्णय पहले ही हो चुका है और राहुल गांधी का अध्यक्ष बनना तय है।

राहुल गांधी की टीम को पंचायत से लेकर संसद तक में लगा दिया गया है, जिसका पार्टी में हर पद और जगह पर नियंत्रण है। कांग्रेस के नए अध्यक्ष का कार्यकाल वर्ष 2022 से 2027 तक होने वाला है। उनका तर्क है कि क्या गांधी परिवार से बाहर के किसी व्यक्ति को कांग्रेस इतने लंबे समय तक अध्यक्ष बनाए रख सकेगी? सवाल यह भी है कि तीन गांधियों-यानी सोनिया गांधी, राहुल और प्रियंका की मौजूदगी में गांधी परिवार से बाहर का कोई अध्यक्ष क्या स्वतंत्र रूप से अपनी जिम्मेदारी निभा पाएगा। उदयपुर में इन सवालों का कोई जवाब नहीं मिला।

कोटे के भीतर कोटा, यानी कि महिला आरक्षण विधेयक पर पार्टी की सहमति न सिर्फ प्रतिगामी है, बल्कि इससे साफ है कि कांग्रेस ने समय बीत जाने पर इस पर अपना विचार बदला है। अगर कांग्रेस ने महिला आरक्षण विधेयक में अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और दूसरे पिछड़े वर्ग की महिलाओं के कोटे पर सहमति जताई होती, जिससे कि लोकसभा और विधानसभाओं की एक तिहाई सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित हो जातीं, तो वह विधेयक तब पारित हो जाता।

रशीद किदवई

मिला जुला

ज्ञानवापी मस्जिद का सर्वे पूरा

हिंदू पक्ष ने किया दावा-'बाबा मिल गए', आज कोर्ट में पेश होगी रिपोर्ट

वाराणसी। ज्ञानवापी मस्जिद का सर्वे पूरा हो गया है। तीसरे और अंतिम दिन करीब सवा दो घंटे तक सर्वे चला। सर्वे के बाद हिंदू पक्ष के वकील ने दावा किया कि जितना सोचा था उससे ज्यादा साक्ष्य मिले हैं। हिंदू पक्ष के सोहनलाल ने कहा-'बाबा मिल गए।'

कहां मिल गए? पूछे जाने पर सोहनलाल ने कहा कि ये मत पूछिए। उन्होंने संतकबीर का दोहा-'जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ, मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ।' सुना दिया।

कल पेश की जाएगी रिपोर्ट

ज्ञानवापी मस्जिद को लेकर कोर्ट ने 12 मई को अपना फैसला सुनाया था। इस दिन कोर्ट ने ज्ञानवापी मस्जिद सर्वे के लिए नियुक्त किए गए एडवोकेट कमिश्नर अजय कुमार मिश्रा को हटाए जाने से इनकार कर दिया था। कोर्ट ने अजय मिश्रा के साथ विशाल कुमार सिंह को कोर्ट कमिश?नर और अजय सिंह को असिस्टेंट कमिश्नर बनाया था। कोर्ट ने सर्वे की कार्रवाई पूरी करके 17 मई तक रिपोर्ट दाखिल करने को कहा था।

मुस्लिम पक्ष ने नकारा हिंदू पक्ष का दावा

उधर, मुस्लिम पक्ष ने हिंदू पक्ष का दावा नकार दिया है। उनका कहना है कि सर्वे में ऐसा कुछ नहीं मिला है। इससे पहले आखिरी दिन का सर्वे पूरा होने पर हिंदू पक्ष ने दावा किया था कि-'बाबा मिल गए।

भाकियू में विभाजन का भाजपा MLA उमेश मलिक पर हमले से कनेक्शन, कैसे घिरते गए टिकैत बंधु

मुजफ्फरनगर शामली। किसान आंदोलन के दौरान प्रमुख संगठन रहे भारतीय किसान यूनियन में यूं तो 35 सालों में 11 बार टूट हुई है, लेकिन इस बार यह बड़ा विभाजन है। अराजनैतिक होने का दम भरने के बावजूद विधानसभा चुनावों में खुलकर भाजपा के खिलाफ राजनीति करना टिकैत बंधुओं को महंगा पड़ गया। उनके निकट सहयोगियों ने उनका साथ छोड़ते हुए नए किसान संगठन भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक गठन किया है। इसमें जिले की दूसरी सबसे बड़ी गठवाला खाप के चौधरी को चेयरमैन और राष्ट्रीय संरक्षक बनाया गया है।

एक नजर

तुर्की को स्वीडन और फ़िनलैंड के नेटो में शामिल होने पर क्यों है एतराज़

तुर्की को क्या है आपत्ति

स्वीडन और फ़िनलैंड ने आख़िरकार घोषणा कर दी है कि वो नेटो की सदस्यता के लिए आवेदन करेंगे लेकिन इससे तुर्की की भौंहें तन गई हैं. यूक्रेन पर हमले के बाद रूस ने स्वीडन और फ़िनलैंड को नेटो में शामिल होने को लेकर चेतावनी दी थी लेकिन दोनों देशों ने इस ऐतिहासिक फ़ैसले को लेने में बिलकुल भी देर नहीं की है. इस पूरे घटनाक्रम के बीच तुर्की भी काफ़ी अहम मुल्क बन रहा है जिसने कई बार रूस और यूक्रेन के बीच बातचीत कराई है लेकिन इस नए घटनाक्रम में तुर्की ने फ़िनलैंड और स्वीडन की आलोचना की है. तुर्की ने साफ़ कर दिया है कि वो नेटो में फ़िनलैंड और स्वीडन को शामिल करने से पहले अपनी चिंताओं को दूर करना चाहता है.

नेटो के सदस्य तुर्की के आरोप हैं कि ये दोनों देश कुर्दिस्तान वर्किंग पार्टी (पीकेके) का समर्थन करते रहे हैं जो कि कई दशकों से तुर्की की सरकार के ख़िलाफ़ हथियारबंद संघर्ष छेड़े हुए हैं.

रविवार को तुर्की के विदेश मंत्री मेवलूत चेवूशोगलू ने कहा कि स्वीडन और फ़िनलैंड को अपने देशों में तुरंत आतंकवाद का समर्थन बंद कर देना चाहिए और सुरक्षा गारंटी देते हुए तुर्की पर से निर्यात प्रतिबंध हटा देना चाहिए.

आदिवासी नेता नंदकुमार साय को मुख्यमंत्री का चेहरा बनाएं भाजपा-महेंद्र राजपूत

जोहार छत्तीसगढ़-महासमुंद।

बीते एक दशक पूर्व से छत्तीसगढ़ राज्य की सत्ता पर आदिवासी नेतृत्व की मांग करते आ रहे गैर आदिवासी सामाजिक कार्यकर्ता महेन्द्र सिंह राजपूत ने पुन भाजपा हाईकमान से आगामी चुनाव में मुख्यमंत्री का चेहरा नंदकुमार साय को बनाये जाने की मांग की है। कहा है कि आने वाले वर्ष में विधानसभा के चुनाव होने है। आदिवासी बाहुल्य छत्तीसगढ़ में आदिवासियों को सुअवसर मिला है कि वे जल जंगल, जमीन और सांस्कृतिक विरासत को बचाये रखने के लिये सत्ता पर भी अपना अधिकार रखे। गोंडवाना राज्य छत्तीसगढ़ में भाजपा के लिये सर्वप्रिय वरिष्ठ नेता नंदकुमार साय मुख्यमंत्री के चेहरे का विकल्प हो सकता है। छत्तीसगढ़ राज्य के निर्माता स्व अटल बिहारी बाजपेयी भी नये राज्य में नंदकुमार साय को ही मुख्यमंत्री के रूप में देखने के आकांक्षी थे। लेकिन बहुमत के अंक गणित में कांग्रेस को पहला मौका मिल गया और तब आगे तीन साल तक नेता प्रतिपक्ष की प्रभावी भूमिका अदा करने के बाद भाजपा को सत्ता तो मिली पर नंदकुमार को कोई प्रतिफल नहीं मिल पाया। या हरहाल 2018 में कांग्रेस की सरकार बनने के बाद आज चार वर्षों के भीतर अराजकता हर ओर फैल गई है। शासकीय कर्मचारियों में भी सरकार के खिलाफ काफी आक्रोश है। हर तरफ से हड़ताल और आंदोलन की बौछार होने के बाद भूपेश सरकार ने एक प्रकार से अघोषित आपातकाल लागू कर दिया है।

पत्रकार जेल में घूंसे जा रहे हैं। पत्रकारों को मौन आंदोलन करने तक की आजादी नहीं है। 841 हेक्टेयर क्षेत्र में विस्तारित हसदेव अरण्य को अजाड़ा जा रहा है। लाखों पेड़ों की बली चढ़ेगी और राजस्थान में कांग्रेस की गहलोत सरकार बची रहेगी। अब तो 2 रुपये किलो में खरीदा गया गोबर भूपेश सरकार द्वारा 10 रुपये के भाव में किसानों पर ही जबरदस्ती थोपा जा रहा है। इसलिये जरूरी हो गया है कि राज्य की सत्ता से कांग्रेस को उखाड़ फेंके और बस्तर से सरगुजा तक आदिवासी अस्मिता को बचाये रखने पूर्णत: समर्थ और सर्व आदिवासी नेता नंदकुमार साथ को मुख्यमंत्री के रूप में प्रस्तुत कर भाजपा सत्ता में पुन वापस काबिज हो सकती है।

देश में कोरोना की थमने लगी है नई लहर

नई दिल्ली। कोरोना वायरस ने पिछले चार हफ्तों से जो चिंता बढ़ाई हुई थी, अब उसमें कुछ राहत के संकेत मिल रहे हैं। दिल्ली-NCR समेत बाकी इलाकों में भी कोविड के नए मामले और मौत का आंकड़ा कम होता दिख रहा है. कल खत्म हुए हफ्ते की बात करें तो दिल्ली-NCR में कोरोना केसों में 20 फीसदी की कमी दर्ज की गई है। देश की बात करें तो 9-15 मई के बीच कुल 18,500 नए कोरोना केस सामने आए।

नेपाल में डिप्लोमेसी, लखनऊ में डिनर... योगी कैबिनेट के साथ पीएम मोदी करेंगे संवाद

मंत्रियों को देंगे गुड गवर्नेंस के टिप्स

लखनऊ। नेपाल की यात्रा से लौटते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज शाम लखनऊ में सीएम योगी आदित्यनाथ के मेहमान बनेंगे। सीएम आवास में पीएम मोदी मुख्यमंत्री योगी के कैबिनेट के सहयोगियों के साथ डिनर करेंगे और उन्हें गुड गवर्नेंस के टिप्स के देंगे, अपनी सरकार का एजेंडा मंत्रियों को बताएंगे और उन्हें अपनी सरकार की प्राथमिकताएं भी बताएंगे. उत्तर प्रदेश में सीएम योगी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनने के बाद योगी के मंत्रियों के साथ प्रधानमंत्री मोदी की ये पहली मुलाकात होगी। बता दें कि आज बुद्ध पूर्णिमा के मौके पर पीएम मोदी आज नेपाल की यात्रा पर निकल चुके हैं. पीएम मोदी नेपाल में भगवान बुद्ध की जन्मभूमि लुम्बिनी में पूजा अर्चना करेंगे, उनके साथ नेपाल के पीएम शेर बहादुर देउबा भी होंगे। लुम्बिनी से पीएम मोदी उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में आएंगे. यहां महापरिनिर्वाण स्थल पर पीएम मोदी का कार्यक्रम है. यहां पीएम मोदी लखनऊ जाएंगे.

हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी अंग्रेजी माध्यम में छात्रों के प्रवेश हेतु विद्यालय में बेहतर शिक्षा तलाश रहे अभिभावक- प्राचार्य

जोहार छत्तीसगढ़-
सीतापुर।

छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल रायपुर द्वारा गत 14 मई को कक्षा 10वीं एवं 12वीं के बोर्ड परीक्षा सत्र 2021-22 का परिणाम जारी किया गया। स्वामी आत्मानंद शासकीय उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम उत्तर माध्यमिक विद्यालय देवगढ़ सीतापुर सरगुजा छत्तीसगढ़ के छात्र-छात्राओं का परिणाम शत प्रतिशत रहा।

संस्था के प्राचार्य सुनील कुमार गुप्ता ने बताया कि इस वर्ष कक्षा दसवीं की बोर्ड परीक्षा में विद्यालय से कुल 47 छात्र-छात्राएं शामिल हुए जिनमें 31 छात्र प्रथम श्रेणी से, 15 छात्र द्वितीय श्रेणी से तथा एक छात्र तृतीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए, कक्षा दसवीं में 100: छात्रों ने सफलता हासिल की वही 2 छात्रों ने 90: से अधिक तथा 4 छात्रों ने 80: से अधिक अंक प्राप्त किए, विद्यालय से कुमारी रानी निराला सर्वाधिक 92.2: अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रही द्यइसी प्रकार हायर सेकेंडरी में गणित एवं जीव विज्ञान संकाय के कुल 14 छात्र बोर्ड परीक्षा में शामिल हुए जिनमें 12 प्रथम श्रेणी से तथा 2 छात्र द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए द्य विद्यालय की छात्रा कुमारी अनीशा गुप्ता 80,2: अंक प्राप्त कर प्रथम स्थान पर रही। हायर सेकेंडरी परीक्षा में भी 100: छात्रों ने सफ लता हासिल की, सभी छात्र-छात्राओं के बेहतर परीक्षा परिणाम पर हर्ष व्यक्त करते हुए संस्था के प्राचार्य सुनिल कुमार गुप्ता ने सभी छात्र-छात्राओं को बधाई एवं उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित की है। ज्ञातव्य है कि गत 30 अप्रैल को विद्यालय में लोकल परीक्षाओं के भी परिणाम घोषित किए गए जिसमें सभी कक्षाओं में छात्रों ने 100: सहभागिता के साथ सफ लताएं अर्जित कीद्य इस तरह विद्यालय के कक्षा 1 से बारहवीं तक सभी कक्षाओं का परीक्षा परिणाम 100: रहा विद्यालय के चुस्त-दुरुस्त अनुशासन एवं शिक्षण व्यवस्था से क्षेत्र में लगातार छात्रों एवं अभिभावकों में विद्यालय के प्रति रुझान बढ़ रही है जिसका अनुमान विद्यालय में छात्रों के प्रवेश हेतु अभिभावकों की प्रतिदिन लग रही भीड़ से लगाया जा सकता है द्यप्रारंभ से अब तक विद्यालय अपना कुल 2 शिक्षा सत्र पूरा कर तीसरे शिक्षा सत्र के रूप में 2022-23 में प्रवेश कर चुका है। कक्षा एवं छात्र संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि को देखते हुए विद्यालय में शिक्षण कक्ष, बैठक व्यवस्था एवं अन्य महत्वपूर्ण सुविधाओं की आवश्यकता महसूस की जा रही है जिसे शासन स्तर से यथासंभव मुहैया कराए जाने की बात कही गई है द्य संस्था की ओर से हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी में अंग्रेजी माध्यम में अपने पाल्य के बेहतर शिक्षा की तलाश कर रहे अभिभावकों से अपील की गई है कि वे संकायवार रिक्त सीटों मेंअपने पाल्य के प्रवेश हेतु समय रहते पहल करें ताकि प्रवेश मिलने पर यथाशीघ्र समय का उपयोग करते हुए उनका शिक्षण कार्य प्रारंभ किया जा सकेद्य वर्तमान सत्र से कक्षा नवमी एवं दसवीं में दो. दो सेक्शन प्रति सेक्शन 50 सीट के मान से तथा कक्षा 11वीं एवं 12वीं में गणित एवं जीव विज्ञान संकाय की संयुक्त रूप से एक-एक कक्षा 50 सीट के मान से तथा वाणिज्य की एक-एक कक्षा 50 सीट के मान से विद्यालय में संचालित होंगी वही कक्षा 1 से 8 में यथा पूर्व 50-50 छात्रों की सीटें यथावत रहेंगी।

रखरखाव के लिए बंद सीपत की एक इकाई शुरू

कोरबा । नेशनल थर्मल पावर कार्पोरेशन एनटीपीसी सीपत की 660 मेगावाट की दो नंबर इकाई शुरू हो गई है। रखरखाव कार्य के लिए करीब ढाई माह पहले इसे प्रबंधन ने बंद किया था। ठीक गर्मी के मौके पर मरम्मत कार्य का निर्णय लिए जाने की वजह से करीब सात राज्यों में बिजली आपूर्ति प्रभावित हुई। अब इकाई के प्रारंभ होने से इन राज्यों को राहत मिलेगी।

सीपत संयंत्र से 660 मेगावाट की तीन व 500 मेगावाट की दो इकाइयां से कुल 2980 मेगावाट बिजली उत्पादन होती है। अक्टूबर 2021 में संयंत्र की 660 मेगावाट क्षमता की दो नंबर इकाई के जनरेटर में तकनीकी खराबी आने के साथ बंद हो गया। जनरेटर बिहार के बाढ़ प्रोजेक्ट से मंगाया गया है। इस वजह से सुधार कार्य में विलंब होना तय था। इसके बावजूद प्रबंधन ने मार्च माह में 660 मेगावाट की दो नंबर इकाई को वार्षिक रखरखाव के लिए बंद कर दिया। करीब ढाई माह तक एक साथ 1320 मेगावाट उत्पादन घटने से महाराष्ट्र, गुजरात, मध्य प्रदेश, पंजाब व गोवा समेत सात राज्यों में बिजली आपूर्ति प्रभावित हुआ।

इस बीच प्रबंधन पर रखरखाव के लिए बंद इकाई को पुन: प्रारंभ करने दबाव बना। युद्धस्तर पर दिन रात 24 घंटे सुधार कार्य करते हुए 13 मई को इकाई शुरू किया गया। इस इकाई से 25 फीसद बिजली राजीव को मिलने लगी है। वहीं अन्य राज्यों को भी बिजली आपूर्ति शुरू कर दी गई है। बंद 660 मेगावाट एक अन्य इकाई के लिए बिहार से मंगाया गया जनरेटर जल्द ही पहुंचने की उम्मीद है। जानकार सूत्रों का कहना है कि जनरेटर पहुंचने के बाद ही सुधार कार्य में करीब एक माह का वक्त और लगेगा।

दो नंबर इकाई के पूरे लोड पर चलने से सीपत संयंत्र में कोयले की खपत बढ़ गई है। यहां साउथ ईस्टर्न कोलफिल्ड्स लिमिटेड एसईसीएल के दीपका खदान से कोयला आपूर्ति की जाती है। इसके लिए मेरी.गो. राउंड रेल परिवहन की सुविधा है। बताया जा रहा है कि प्रबंधन ने कोयले की मांग बढ़ाते हुए मेरी. गो. राउंड के फेरे बढ़ाने कहा है।

समर कैम्प से बच्चों के व्यक्तित्व विकास के साथ बढेगा आत्मविश्वास-कलेक्टर

जोहार छत्तीसगढ़-
जशपुरनगर।

जशपुर विधायक विनय भगत एवं कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल की उपस्थिति में नि:शुल्क समर कैंप शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक राजेश अग्रवाल, जिला पंचायत सीईआ केएस मंडावी, जनपद अध्यक्ष कल्पना लकड़ा, आदिवासी विभाग विभाग के सहायक आयुक्त बीके राजपूत, डीईओ जेके प्रसाद,सूरज चौरसिया,मनमोहन भगत, किरण कांति सिंह बीईओ एमजेड यूसिदीकी सहित समर कैम्प केसभी विधाओं के प्रशिक्षक उपस्थित रहे।

विधायक विनय भगत ने बच्चों को सम्बोधित करते हुए कहा कि एक अच्छी सोंच के साथ बच्चों के लिए समर कैम्प जिले के आठो ब्लॉक में शुरू किया गया है। जिसका आज शुभारम्भ हो रहा है, रंग बिरंगे कपडे में बच्चे भी उत्साहित दिख रहे है, मुझे भी यह देखकर खुशी हो रहा है और मुझे अपनो बचपना याद आ रहा है। उन्होंने कहा कि बच्चे हर क्षेत्र में पारंगत हो और उनका पर्सनालिटी डेवलप हो। विधायक भगतन ने जिला प्रशासन को बच्चों के लिए समर कैम्प के आयोजन करने पर धन्यवाद दिया और कहा कि समर कैम्प में बच्चे मन सेए उत्साह पूर्वक ओर खुशी तथा समर्पित भाव से सभी कुछ करेंगें। उन्होंने बच्चों को अपने रूचि के अनुसार विधाओं को चयन करने के लिए कहा। बच्चों को सकारात्मक सोच के साथ दृढ़ निश्चय के साथ काम करने, खूब पढ़ने और आगे बढ़ने के लिए शुभकामनाएं दी। कलेक्टर रितेश अग्रवाल ने कहा कि गर्मी की छुट्टी में बच्चों का समय बर्बाद होता है इस समर कैम्प में बच्चों को कुछ सीखना हैं। उन्होंने कहा समर कैम्प के संबंध में कुछ सुझाव देना होगा तो उसके लिए सुझाव पेटी लगाया गया है। उन्होंने बच्चों से कहा कि समर कैम्प में आपको खुद को निखारना और सीखना हैं साथ ही आगे बढ़ना है। अपने व्यक्तित्व का विकास करना हैं उन्होंने उपस्थित बच्चों से पूछा कि वे क्या क्या सीखेंगे। बच्चों ने उत्साहित होकर बताया कि वे नृत्य, गायन, वादन, कुकिंग, कैलीग्राफी, पेंटिंग, टेबल टेनिस आदि सीखेंगे। उन्होंने बच्चों से कहा समर कैम्प का आयोजन किया जा रहा जिसमें बच्चों के रचनात्मक गतिविधियों को निखारा जाएगा उनके व्यक्तित्व विकास का विकास होगा। बच्चों को आत्मविश्वास बढ़ेगा जिसका लाभ उन्हें मिलेगा इसके साथ वे यहा मनोरंजन भी करेंगे, विभिन्न विधाओं में अपनी कला का का प्रदर्शन बेहतर कर सकेंगे

कार्यक्रम में उपस्थित पुलिस अधीक्षक राजेश अग्रवाल ने कहा कि ग्रीष्म कालीन शिविर एक अच्छा आयोजन है जो बच्चों के लिए आयोजित हैं। बच्चे इसमें समर्पण का का भाव सीखेंगे आपको समर्पित भाव से सीखना है। सीखना है यही इस समर कैम्प की सफ्लता का मुख्य रूप होगा।

दो ट्रकों में जबरदस्त भिड़ंत चालकों की हुई मौके पर मौत ,परिचालक गंभीर

बेमेतरा । नेशनल हाईवे में एक बार फिर आज सुबह दो ट्रकों के बीच आमने-सामने की भिड़ंत गुनरबोड और उप जेल के बीच हो गई । जिससे मौके पर ही दोनों ट्रकों के ड्राइवर की मौत हो गई । एक हेल्पर घायल हुआ है ।हादसा इतना जबरस्त था कि ड्राइवर के सर धड़ से अलग हो गया और शरीर के टुकड़े टुकड़े हो गए। हादसे के घंटों बाद तक मृत ड्राइवर का आधा भाग वाहन में हीं फसा रहा। पुलिस के द्वारा बड़े ही मशक्कत के बाद वाहन में फंसे दोनों ही शवों को बाहर निकाला गया जबकि घायल हेल्पर को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है।

भाजपा की जेल भरो आंदोलन में अपनी सहयोगी पंचों के साथ पहुंची सरपंच भामिनी

जोहार छत्तीसगढ़-
महासमुंद।

जिलाध्यक्ष रूपकुमारी चौधरी की आगुवाई में जेल भारी आंदोलन में साथ देने ग्राम पंचायत बेलसोंडा की सरपंच एवम् भाजपा महिला मोर्चा ग्रामीण मंडल की अध्यक्ष भामिनी पोखन चंद्राकर अपनी सहयोगी पंचों एवम् ग्रामीणजन के लोहिया चौक पहुंची। चंद्राकर की कट्टरता एवम् पार्टी के प्रति निष्ठा इस बात की साक्ष्य है कि पिछले दो वर्षो से उनकी पंचायत को विधायक निधि से एक भी कार्य नहीं मिला है उसके बावजूद चंद्राकर भारतीय जनता पार्टी की प्रत्येक गतिविधि में शीर्ष नेताओं के साथ बेखौफ होकर कंधे से कंधा मिलाकर चलती है। चंद्राकर ने बताया कि कांग्रेस सरकार आने वाली विधानसभा चुनाव मे अपनी हार को भांपकर ही यह दमनकारी नीति एवम् काला कानून बनाए है ताकि उनकी विफ्लताओं को जनता एक दूसरे के साथ सांझा न कर सके। उन्होंने बताया कि इस भ्रष्ट सरकार को इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए 1975 की आपातकाल से सीख लेनी चाहिए जिससे क्षुब्ध होकर जनता जनार्दन ने 1977 की आम चुनाव मे कांग्रेस सरकार को उखाड़ फेका था ठीक वही पुनरावृत्ति छत्तीसगढ़ की जनता जनार्दन आगामी 2023 की विधानसभा चुनाव मे दिखाएगी। उन्होंने बताई की संविधान मे देश की जनता को स्वतंत्र रूप से जीवन यापन एवम् अपनी समस्या को अभिव्यक्त करने का अधिकार दिया गया है जिसमे सरकार की गलत नीतियों के खिलाफ हल्ला बोल, हड़ताल एवम् धरना प्रदर्शन की भी आजादी दी गई है लेकिन छतीसगढ़ की कांग्रेस सरकार द्वारा अपनी विफ्लताओं के उजागर होने के डर से ही किसी भी प्रकार की धरना प्रदर्शन को बिना पूर्वानुमति के नाजायज करार देने की कानूनी घोषणा एक काला कानून है ताकि अभिव्यक्ति की आजादी पर राज्य सरकार अंकुश लगा सके।

यह जनता जनार्दन की स्वतंत्रता का पूर्ण रूपेण हनन है तथा इनका राज्यस्तर पर पुरजोर विरोध होना ही चाहिए। सरपंच चंद्राकर के साथ उनके पंचों मे त्रिवेणी चंद्राकर, ईशा धीवर, हेमा साहू, सरस्वती साहू सक्रिय पंच प्रकाश साहू एवं बलराम चंद्राकर व बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित थे।

एक नजर

डेंगू से बचाव के लिए हर सप्ताह कूलर का पानी पूरा खाली करें क्योंकि एडीस मच्छर स्थिर पानी में ही पनपता है

16 मई को विश्व डेंगू दिवस

जोहार छत्तीसगढ़-जशपुरनगर।

जन जागरूकता और जानकारी की कमी के कारण हर साल हजारों लोग डेंगू बुखार की चपेट में आ जाते हैं। इस बीमारी के बारे में लोगों को जागरूक करने और डेंगू से होने वाली मौतों को रोकने हर वर्ष 16 मई को विश्व डेंगू दिवस मनाया जाता है। संचालक, महामारी नियंत्रण सह राष्ट्रीय वेक्टर जनित रोग नियंत्रण कार्यक्रम के राज्य नोडल अधिकारी डॉ. सुभाष मिश्रा ने बताया कि डेंगू एडीस नामक मच्छर के काटने से होता है और यह मच्छर साफपानी में पनपता है। उन्होंने बताया कि यह मच्छर सामान्यत: दिन में काटता है एवं यह स्थिर पानी जैसे कूलर, टंकी या घर में खुले में रखे बर्तन जिसमें कई दिनों से पानी बदला न गया हो या अन्य कोई जगह जहां पानी जमा हुआ होए वहाँ डेंगू के मच्छर पनपते हैं। इसलिए घरों में उपयोग किए जाने वाले कूलर, टंकी या अन्य बर्तन आदि को जहां पानी जमा होता होए उसे सप्ताह में एक दिन ड्राई-डे मनाते हुए पानी को पूरा बदलना चाहिए।

डेंगू के लक्षण

डॉ. मिश्रा ने बताया की बरसात शुरू होते ही मच्छर जनित रोगों जैसे डेंगू का खतरा बढ़ जाता है। तेज बुखार, बदन, सर एवं जोड़ों में दर्द, जी मचलाना एवं उल्टी होना, आंख के पीछे दर्द, त्वचा पर लाल धब्बे या चकते का निशान, नाक, मसूढ़ों से रक्तस्त्राव, काला मल का आना आदि डेंगू के लक्षण हैं। इस तरह के लक्षण हों तो अपने निकटतम शासकीय स्वास्थ्य केंद्र जाकर डेंगू की जांच अवश्य कराएं।

डॉ. मिश्रा ने बताया कि डेंगू का असर शरीर में 3 से 9 दिनों तक रहता है। इससे शरीर में अत्यधिक कमजोरी आ जाती है और शरीर में प्लेटलेट्स लगातार गिरने लगता है। इन लक्षणों के प्रति सावधान रहने की जरूरत है।

डेंगू से बचाव

डेंगू से बचाव के लिए घर में साफ-सफाई पर ध्यान रखें व कूलरए गमलेए बर्तन आदि में पानी जमा न होने दें या पानी रोज बदलें। सोते समय दिन हो या रात मच्छरदानी का उपयोग करें। पूरे शरीर को ढंकने वाले कपडे पहने एवं कमरों की साफ-सफाई के साथ उसे हवादार रखें। घर के आसपास गंदगी जमा न होने दें। जमा पानी एवं गंदगी पर कीटनाशक का प्रयोग करें। खाली बर्तन, टायर व पुराने बर्तन, फूलदान एवं अन्य सामानों में पानी जमा न होने दें। जमे हुए पानी में मच्छर के लारवा दिखने पर ए लर्विसायिड या मिट्टी का तेल डालेंए 24 घंटे के बाद इस पानी को फेंके। मच्छरों से बचने घरों के दरवाजे व खिड़कियों में जाली जरूर लगाएं। डेंगू के लक्षण मिलने पर तुरंत अपने नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र जाकर स्वास्थ्य की जांच अवश्य कराएं।

महिला का बनाया अश्लील वीडियो, दो आरोपी गिरफ्तार

कोरबा । छत्तीसगढ़ के कोरबा में एक घर में काम करने गए 2 युवकों ने उसी घर की महिला का एक अश्लील वीडियो बना लिया। दोनों उस घर में टाइल्स लगाने का काम करने गए थे। फिर मौका मिला तो उन्होंने महिला के नहाते वक्त का वीडियो बना लिया। मगर उसी वक्त महिला का पति घर पहुंच गया और अब पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है। मामला रामपुर चौकी क्षेत्र का है।

बताया जा रहा है कि रामपुर चौकी क्षेत्र में रहने वाले एक परिवार के यहां टाइल्स लगाने का काम किया जाना था। इस परिवार में पति-पत्नी ही रहते हैं। टाइल्स लगाने का काम ओसामा हुसैन18 और तंजीम खान19 को दिया गया था। रविवार को दोनों ने काम करना शूरू कर दिया इस दौरान महिला का पति किसी काम से बाहर गया था। इधर, महिला का पति जैसे बाहर गया। कुछ समय बाद महिला घर के ही बाथरूम में नहाने के लिए गई थी। इसी वक्त दोनों आरोपी दीवार के पीछे से महिला का वीडियो बनाने लगे। दोनों वीडियो बनाने में लगे थे। इतने में महिला का पति फिर वापस घर पहुंच गया और उसने दोनों की ये हरकत देख ली। जिसके बाद दोनों को पकड़ लिया गया। इसके बाद आस-पास के लोगों को भी बुलाया गया। बाद में पुलिस को भी इसकी जानकारी दी गई। तब पुलिस मौके पर पहुंची और दोनों को गिरफ्तार कर लिया गया है।

सड़क दुर्घटना के बाद बाइक में लगी आग, दो घायल

कोरबा । पाली के बनबांधा स्थित घनश्याम किराना दुकान के पास एक बाइक सवार को अज्ञात वाहन ने ठोकर मार दी। घटना इतनी जबरदस्त थी कि बाइक सवार माखनपुर निवासी आनंद सिंह व एक अन्य दूर फेंका गए और बाइक में आग लग गई। जानकारी मिलते ही आसपास के लोग एकत्र हो गए और आनन फानन में पानी डाल कर आग बुझाया। घटना रात 9.45 बजे घटित हुई। घायलों की हालत गंभीर होने पर उपचार के लिए बिलासपुर रेफर कर दिया गया।

विधायक भगत एवं कलेक्टर अग्रवाल की उपस्थिति में बगीचा के जुरगुम में खण्ड स्तरीय जन चौपाल का हुआ आयोजन

ग्रामीणों को योजनाओं से जुड़कर आर्थिक लाभ लेने हेतु किया प्रोत्साहित

जोहार छत्तीसगढ़-
जशपुरनगर।

जशपुर विधायक विनय भगत एवं कलेक्टर रितेश कुमार अग्रवाल की उपस्थिति में विगत दिवस जनपद पंचायत बगीचा के ग्राम जुरगुम में खण्ड स्तरीय जन चौपाल का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर एसडीएम विजय प्रताप खेस्स्ए जनपद सीईओ विनोद सिंह सहित जनप्रतिनिधि एवं विभिन्न विभागों के खण्ड स्तरीय अधिकारीगण उपस्थित थे। कार्यक्रम में विधायक भगत एवं कलेक्टर अग्रवाल द्वारा उपस्थित सभी ग्रामीणों को विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के सम्बंध में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्होंने कहा कि शासन निरंतर लोगों को आर्थिक लाभ पहुंचाने एवं उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए अनेक कल्याणकारी योजना संचालित कर रही है। जिससे समाज के हर वर्ग का व्यक्ति योजना से लाभान्वित हो सके। उन्होंने सभी ग्रामीणों को शासन की योजनाओं से जुड़कर लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस दौरान विधायक एवं कलेक्टर द्वारा ग्रामीणों से उनकी समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की गई एवं ग्रामीणों की परेशानियों को गंभीरता से सुना। उन्होंने ग्रामीणों के पेयजल, विभिन्न प्रकार के पेंशन भुगतान, सीमांकन, नामांतरण, बटांकन सहित अन्य राजस्व प्रकरण एवं अन्य समस्याओं के त्वरित निराकरण करने हेतु संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया। इस अवसर पर कृषि, पशुपालन, मत्स्य, उद्यानिकी सहित अनेक विभागों द्वारा योजनाओं की जानकारी प्रदान करने के लिए स्टॉल लगाया गया। जहां ग्रामीणों की समस्याओं का प्राथमिकता से सुनते हुए उन्हें योजनाओं के संबंध में जानकारी प्रदान कर योजना का लाभ लेने हेतु प्रेरित किया गया। साथ ही विभिन्न विभागीय योजनाओं के तहत् हितग्राहियों को सामग्रियों का वितरण भी किया गया।

पंचुराम बने सर्व धोबी समाज के अध्यक्ष

सौहार्द, एकता और भाईचारा के समावेश से नई दिशा में कार्य करने की योजना

जोहार छत्तीसगढ़-
महासमुंद।

सर्व धोबी समाज की बैठक पिथौरा स्थित शीतला माता मंदिर परिसर में सम्पन्न हुई। बैठक में जिलेभर के 07 परिक्षेत्र के सामाजिक पदाधिकारी एवं सदस्यगण शामिल हुए। इस दौरान विभिन्न विषयों पर चर्चा किया गया। समाज के विकास में गति लाने के लिए जिला पदाधिकारियों की गठन भी किया गया। जिसमें जिला अध्यक्ष पद के लिए 2 उम्मीदवार देवानन्द निर्मलकर, खल्लारी राज परिक्षेत्र एवं पन्चुराम निर्मलकर, कौड़ियां राज परिक्षेत्र ने नामांकन दाखिल किया। जिसके बाद 06 परिक्षेत्र के सामाजिक लोगों ने मतदान किया। जिसमें पन्चुराम निर्मलकर विजयी घोषित हुए। बाकी अन्य पदों पर सर्वसम्मति से निर्विरोध पदाधिकारियों का मनोनीत किया गया। जिसमें जिला उपाध्यक्ष टेकराम निर्मलकर, डॉ. सचिदानंद निर्मलकर, पन्नालाल निर्मलकर, रेखलाल निर्मलकर, चैतराम निर्मलकर, गौत्तम निर्मलकर, सचिव शशिभूषण निर्मलकर बनाये गए वहीं जिला सह-सचिव नोहरलाल निर्मलकर, अजय निर्मलकर, कोषाध्यक्ष देवानन्द निर्मलकर, जिला प्रवक्ता तरुण निर्मलकर, इतवारी राम निर्मलकर, जिला मीडिया प्रभारी चंदन निर्मलकर, राजकुमार निर्मलकर एवं संरक्षक भारत निर्मलकर, ईश्वर प्रसाद सेठ सोनसाय निर्मलकर मनोनित हुए।

बैठक में नवनिर्वाचित जिला अध्यक्ष पन्चुराम निर्मलकर ने समाज को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि जो जिम्मेदारी मुझे समाज ने दी है। मैं समाज को आगे बढ़ाने के लिए निष्ठा से कार्य करूंगा। और समाज के विकास को आगे बढाने के लिए हरकदम प्रयासरत रहूंगा। वहीं नवनिर्वाचित जिला उपाध्यक्ष टेकराम निर्मलकर ने कहा कि समाज में आपसी सौहार्दए एकता एवं भाईचारा बनाये रखने के लिए हर दम प्रयास किया जाएगा। लोगों को जागृत कर समाज के प्रति समर्पित करने की नई पहल किया जाएगा। वहीं नवनिर्वाचित सचिव शशिभूषण ने कहा की धोबी समाज में एकता बनाये रखने एवं समाज को आगे बढाने के लिए नये योजनाबद्ध तरीके से कार्य कर नई पहल की शुरुआत की जाएगी। सभी नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को सामाजिक लोगों ने समाज को नई दिशा देने के लिए शुभकामनाएं दी है। इस दौरान इस बैठक में अध्यक्ष राजा देवरी परिक्षेत्र मनीराम रजक, कौड़िया राज से सोहन निर्मलकर, देवानन्द निर्मलकर खल्लारी, शोभाराम सेठ, सफेद लाल निर्मलकर, जीवराखन निर्मलकर, अरविंद, दिनेश, मदन, रेशमलाल रजक, नन्दलाल सहित भारी संख्या में सामाजिक लोग मौजूद रहे।

कांग्रेस ने आन्दोलन एवं अन्य कार्यक्रमों के लिए जारी किया आदेश के खिलाफ आयोजित विशाल सभा व जेल भरो आंदोलन

जोहार छत्तीसगढ़-कोरिया।

कांग्रेस द्वारा आन्दोलन एवं अन्य कार्यक्रमों के लिए जारी किये गये आदेश के खिलाफ नगर पालिका काम्प्लेक्स में आयोजित विशाल सभा व जेल भरो आंदोलन सम्पन्न हुआ।

किसान मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष श्याम बिहारी जायसवाल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि देश के श्रमजीवियो समेत समाज के सभी तबको ने अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए लम्बी लडाइयां लड़ी है और उसके बाद हम आज यहां तक पहुचे है। दुभाग्र्य यह है कि प्रदेश की कांग्रेस सरकार अब असहमित के हर आवाज का दमन करना चाहती है। उसने एक काला आदेश निकाल कर रैलियों और प्रदर्शन पर कड़े प्रतिबन्ध और शर्तों को थोपने का काम किया है। जायसवाल ने आगे कहा कि आप सभी अच्छी तरह जानते है कि कांग्रेस ने छत्तीसगढ़ के सपनो को छलने का काम किया है। उसने प्रदेश की सीधी सच्ची जनता को दर्जनों लुभावने सपने दिखा करए उनसे सैकड़ों वादे कर सत्ता हड़प ली। और अब जिस जनता ने उसे सत्ता सौंपी, उसी के साथ वह बर्बरता की सीमा लांघते हुए, प्रदेश के लोगों के लोकतांत्रिक अधिकार की नृशंस कर रही है। ऐसे समय पर जब भाजपा बाबा साहेब डॉ भीम राव अम्बेडकर की जयंती को सामाजिक न्याय पखवाड़ा के रूप में मना रही है, तब छत्तीसगढ़ की जनता के साथ कांग्रेस असामाजिक, अलोकतांत्रिक अन्याय करने पर उतारू है। बाबा साहेब के संविधान दवारा प्रदत्त लोकतान्त्रिक अधिकारों की हत्या की कोशिश कर रही है कांग्रेस। सभा को संबोधित करते हूए जिलाध्यक्ष कृष्ण बिहारी जायसवाल ने कहा कि भपेश सरकार ने एक तुगलकी आदेश जारी कर प्रदेश भर के सभी निजी, सार्वजनिक, धार्मिक, राजनितिक, अन्य संगठनों दवारा प्रस्तावित आयोजनों पर जिसमे भीड़ आती हो, उसे रोकने के लिए 19 बिन्दुओ की शर्त लगाई गयी है, और उसका कठोरता से पालन सुनिश्चित करने को कहा है। इन शर्तो का पूरी तरह पालन कर कोई भी बड़ा धार्मिक राजनितिक/सामाजिक आयोजन संभव ही नहीं है। अत: सीधे तौर पर सरकार यह चाहती है कि जन संगठनों के विरोध प्रदर्शन को, असहमित की आवाज को, विपक्ष को, धार्मिक भावनाओं को, अभिव्यक्ति की आज़ादी को कुचल दे। कांग्रेस का ऐसा करने का इतिहास भी रहा है,आपातकाल लगा कर उसने हम जीने तक के अधिकार से वंचित कर दिया था। उद्बोधन में कोरिया जिला प्रभारी प्रबल प्रताप सिंह जूदेव ने कहा कि ऐसे समय पर जब कांग्रेस सरकार दवारा प्रदेश के किसान, युवाओं के साथ धोखा हुआ है।

जब शिक्षक अभ्यर्थी, विद्या मितान, पुलिस अभ्यर्थी, बिजली कर्मचारी, कोरोना वारियर्स, संविदा कर्मी, आदिवासी, महिलाये, आंगनवाड़ी कार्यकताएं सभी अपनी मानगों को लेकर आंदोलित है जब प्रदर्शन के दौरान किसान अपनी जान दे रहे हैं। जैसा नया रायपुर में हुआ, युवा आत्महत्या कर रहे हैं, तब इन अक्रोशो को खत्म कर उन्हें न्याय देने के बदले, कांग्रेस सरकार उनकी जुबान बंद करने पर उतारू है। जबरा मारे और रोने भी न दे।

एक नजर

ट्रक रोककर मारपीट पैसे की मांग करने वाले 2 आरोपी मौके पर गिरफ्तार

जोहार छत्तीसगढ़-रतनपुर।

ट्रक को रोककर मारपीट करने वाले आरोपी को रतनपुर पुलिस ने किया गिरफ्तार 15 मई 2022 को प्रार्थी उमेंश कुमार रजक पिता शुभकरन रजक उम्र 29 साल साकिन हितौरी थाना बरही जिला कटनी म.प्र. का ट्रक ड्रायवरी का काम करता हैं कि बिलासपुर से कोयला लोड कर सतना जाने के लिये निकला था रतनपुर बस स्टेंड अस्पताल के पास रात्रि करीब 8 बजे पहुंचा था कि 02 व्यक्ति बीच सड़क पर खड़ा हो गये तथा प्रार्थी के ट्रक को रोककर जबरजस्ती पैसे की मांग करने लगे प्रार्थी चालक द्वारा पैसे नहीं देने पर उक्त दोनो आरोपियों द्वारा चालक को अश्लील गालिया देते जान से मारने की धमकी देते हाथ में रखे सरिया से चालक के सिर में मार दिये जिसे ड्रायवर खून से लथपत थाना रतनपुर में सूचना मिलने पर तत्काल मौके पर पुलिस द्वारा दोनों आरोपीयो को थाना लेकर आयी तथा पूछताछ करने पर अपना-अपना नाम राजा उर्फ राजेश सारथी पिता सूकृत राम सारथी उम्र 20 साल साकिन भैरोबाबा मंदिर के पास रतनपुर सौरभ उर्फ शनी बहादुर पिता छेदीलाल बहादुर उम्र 19 साल साकिन करैहापारा थाना रतनपुर का रहने वाले बताये जिन्हें गिरफ्तार कर आज मान न्यायालय मे पेश किया गया।

शासन की जनकल्याणकारी योजनाएं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचें-जैन

जगदलपुर । संसदीय सचिव रेखचंद जैन ने कहा कि मुख्यमंत्री भूपेश बघेल सरकार की मंशा है कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए क्लस्टर स्तर पर जनसमस्या निवारण शिविर आयोजित किया जा रहा है जिसके तहत् विभिन्न विभागों का स्टाइल लगाकर शासनकाल की योजना का लाभ जनता को तुरंत प्रदान किया जा रहा है वहीं कई प्रकार की समस्यायों का निराकरण भी शिविर में ही किए जा रहें हैं। धनपुंजी व माचकोट के वनवासियों को इस दौरान वन अधिकार पत्र भी वितरित किया गया साथ ही 278लाख रूपये का भूमी पूजन भी किया गया। इस शिविर में स्वास्थ्य शिविर भी आयोजित किया गया जिसमें भी कई लोगों का स्वास्थ्य परीक्षण कर दवाईयां भी वितरित किया गया है। संसदीय सचिव श्री जैन ने अपील किया कि शासन-प्रशासन द्वारा आयोजित शिविर में अवश्य पहुंचें और शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लें।

स्व.जीतू स्मृति देना क्रिकेट प्रतियोगिता का हुआ भव्य समापन

जोहार छत्तीसगढ़-कोरिया।

चिरमिरी क्षेत्र के युवा जितेंद्र त्रिपाठी उर्फ जीतू की स्मृति में प्रारंभ हुए स्कूल ग्राउंड में डे नाईट क्रिकेट प्रतियोगिता का कल भव्य समापन कार्यक्रम हुआ। गोदरीपारा और हल्दीबाड़ी के बीच खेले जा रहे फाइनल मुकाबले में गोदरीपाड़ा ने हल्दीबाड़ी की टीम को 20 रनो से हराया गब्बर को मैन ऑफ द मैच दिया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में डॉक्टर विनय जयसवाल महापौर कंचन जयसवाल जिला अध्यक्ष नजीर अजहर सब एरिया जगदीश दास गायत्री बिरहा,नीता डे, वरुण शर्मा शंकर राव सुभाष कश्यप, प्रमोद सिंह, बलदेव दास,अनिमेष सिंह पप्पी पार्षद सुनील पार्षद मुकेश पार्षद शिवराम प्रधान एल्डरमैन, ओमप्रकाश बड़कू भाई एवं विभिन्न अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम संयोजक शिवांश जैन ने बताया कि चिरमिरी क्षेत्र के युवाओं को खेल के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए यह प्रयास किया गया था जिसमें विधायक डॉक्टर विजय जयसवाल एवं महापौर कंचन जयसवाल का विशेष सहयोग उन्हें प्राप्त हुआ आगे और बड़े आयोजन क्रिकेट प्रतियोगिता के रूप में किए जाएंगे। साथ ही उन्होंने ने आयोजन समिति के सभी साथियों का आभार प्रकट किया व्यापारी बंधुओं का आभार प्रकट किया और प्रतियोगिता में सहयोग करने वाले प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से समस्त जनप्रतिनिधियों नगर निगम में सीसीएल पत्रकार बंधुओं सभी को धन्यवाद ज्ञापित किया।

ग्राम नानगूर के भैरम देव मंडई में शामिल हुए संसदीय सचिव रेखचंद जैन

विधि विधान से पूजा अर्चना कर छत्तीसगढ़ बस्तर के सुख शांति समृद्धि की कामना की

जगदलपुर । विधायक जगदलपुर एवं संसदीय सचिव (नगरीय प्रशासन एवं श्रम विभाग) रेखचंद जैन ने ग्राम पंचायत नानगूर मंडई में शामिल हुए एवं भैरम देव की विधि विधान पूर्वक पूजा अर्चना कर छत्तीसगढ़ बस्तर के सुख शांति समृद्धि की कामना की इस अवसर पर विधायक जगदलपुर एवं संसदीय सचिव रेखचंद जैन ने कहा की हमारे प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल जी बस्तर की आस्था के केंद्र माता गुड़ियों के जीर्णोद्धार एवं संरक्षण के लिए लगातार कार्य कर रहे हैं इस हेतु मांग अनूरूप बस्तर आदिवासी क्षेत्र विकास प्राधिकरण के मद से राशि स्वीकृत की जा रही है आज माता के आशिर्वाद से बस्तर में वामपंथ हिंसा पर काबू पाकर पुन: विकास के पथ पर अग्रसर हो रहा है हमारी सरकार बनने के बाद से आदिम संस्कृति एवं मान्यताओं को संरक्षित करने का कार्य लगातार किया जा रहा है माता के आशिर्वाद से आज बस्तर कोरोनावायरस संक्रमण जैसी महामारी से निजात पाने में सफल हो गया है पिछले दो वर्षों से कोरोनावायरस संक्रमण के कारण मेला मंडई का आयोजन वृहद स्तर पर नहीं हो पाया था पर इस वर्ष यह आयोजन वृहद स्तर पर हो रहा है भैरम देव से कामना है की कोरोना यदि अगले वर्ष तक खत्म हो जाएगा तो इस मेले मंडई को और वृहद स्तर पर आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर विधायक जगदलपुर एवं संसदीय सचिव रेखचंद जैन के साथ जिला पंचायत सदस्य धरमुराम मंडावी जनपद पंचायत सदस्य अनिता पोयाम जनपद सदस्य एवं ब्लाक अध्यक्ष नीलू राम बघेल शहर जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री गौरनाथ नाग, पार्षद सूर्या पाणी सरपंच नानगूर शांति बघेल सिडमुड सरपंच हरिबंधु नाग नागलसर सीताराम सेठिया मांझीगुडा परगनिया मांझी सोमारू वरिष्ठ कांग्रेसी राधामोहन दास सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

अंबेडकर प्रतिमा तले चबूतरा सौंदर्यीकरण का लोकार्पण

जोहार छत्तीसगढ़-महासमुंद।

बुध पूर्णिमा के पावन मौके पर अंबेडकर प्रतिमा के लिए चबूतरा निर्माण एवं सौंदर्यीकरण का संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवन लाल चंद्राकर एवं नगर पालिका अध्यक्ष प्रकाश चंद्राकर द्वारा पार्षदों की मौजूदगी में लोकार्पण किया गया। अध्यक्ष निधि साढ़े तीन लाख रुपए से अंबेडकर चौक स्थित डॉ. भीमराव अंबेडकर प्रतिमा के लिए नव निर्मित चबूतरा एवं सौंदर्यीकरण का लोकार्पण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संसदीय सचिव व विधायक विनोद सेवन लाल चंद्राकर थे। अध्यक्षता नगर पालिका अध्यक्ष प्रकाश चंद्राकर एवं विशिष्ट अतिथि के तौर पर लोक निर्माण विभाग के सभापति रिंकू तारेन्द्र चंद्राकर, संदीप घोष, देवीचंद राठी, हफीज कुरैशी, राहुल चंद्राकर, भारतीय बौद्ध महासभा के जिलाध्यक्ष शंकर नंदेश्वर, पीजी बंसोड़, राजू बाघमारे मौजूद रहे। अतिथियों ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण व श्रद्धा सुमन अर्पित कर नमन किया। बाद बौद्ध महासभा के द्वारा सम्मान समारोह आयोजित किया गया। जिसमें समाजजनों ने नगर पालिका अध्यक्ष सहित पार्षदों का पुष्प गुच्छ भेंट कर सम्मान किया गया। इस मौके पर पालिका अध्यक्ष चंद्राकर ने कहा संविधान निर्माता अंबेडकर की प्रतिमा को सुरक्षित स्थान पर रखना पालिका की नैतिक जिम्मेदारी है। इस अवसर पर विधायक प्रतिनिधि दाऊलाल चंद्राकर, भाऊराम साहू, डॉ. एनके मंडपे, ज्योति मंडपे, महेन्द्र सिक्का, सुरेखा कंवर, लक्ष्मी साहू, सुनीता साहू, गुलाब राजपुरोहित, बी एल बेलेकर, व्ही के नागदेवे, रीना वासनिक, बी आर घोडेसवार, संजय रामटेक, वर्षा मोटघरे, सावित्री देवी उके, शालिनी गायगौरे, राजेश रामचंद भालेराव, रतन कामडे, राजेश गजभि, संध्या गजभि, सीएमओ आशीष तिवारी, विक्की महानंद, गोपाल चंद्राकर, चंद्रशेखर बेलदार, गोपाल सोना सहित समाज प्रमुख गण उपस्थित थे।

राष्ट्रीय एकता शिविर झारखंड के लिए महासमुंद की मुस्कान साहू का चयन

जोहार छत्तीसगढ़-धरमजयगढ़।

महासमुंद शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय महासमुंद की राष्ट्रीय सेवा योजना महिला इकाई से एक स्वयंसेवक का चयन राष्ट्रीय एकता शिविर के लिए किया गया है जो आरका जैन विश्वविद्यालय जमशेदपुर टाटानगर झारखंड में 18 मई से 24 मई 2022 तक संचालित होने वाला है। राष्ट्रीय एकता शिविर में कुमारी मुस्कान साहू पिता नीलकंठ साहू बीएससी भाग 3 का चयन हुआ है। इस शिविर में उपस्थित विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां लोक रचनात्मक गतिविधियां, साहित्यिक गतिविधियां आयोजित होगी जिसमें उपस्थित स्वयंसेवक अपने राज्य और विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करेंगे। इस राष्ट्रीय एकता शिविर में चयनित होने के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रमेश कुमार देवांगन, राष्ट्रीय सेवा योजना की जिला संगठक डॉक्टर मालती तिवारीए कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर सरस्वती वर्मा, डॉक्टर स्वेतलाना नागल, डॉ शीलभद्र कुमार एवं महाविद्यालय के समस्त अध्यापकगण, कार्यालय स्टाफ ने हर्ष जताते हुए उसके मार्ग प्रशस्ति के लिए शुभकामनाएं दी। राष्ट्रीय एकता शिविर झारखंड के लिए महासमुंद की मुस्कान साहू का चयन,महासमुंद शासकीय माता कर्मा कन्या महाविद्यालय महासमुंद की राष्ट्रीय सेवा योजना महिला इकाई से एक स्वयंसेवक का चयन राष्ट्रीय एकता शिविर के लिए किया गया है जो आरका जैन विश्वविद्यालय जमशेदपुर टाटानगर झारखंड में 18 मई से 24 मई 2022 तक संचालित होने वाला है। राष्ट्रीय एकता शिविर में कुमारी मुस्कान साहू पिता नीलकंठ साहू बीएससी भाग 3 का चयन हुआ है। इस शिविर में उपस्थित विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक प्रस्तुतियां, लोक रचनात्मक गतिविधियां, साहित्यिक गतिविधियां आयोजित होगी जिसमें उपस्थित स्वयंसेवक अपने राज्य और विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करेंगे। इस राष्ट्रीय एकता शिविर में चयनित होने के लिए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. रमेश कुमार देवांगन राष्ट्रीय सेवा योजना की जिला संगठक डॉक्टर मालती तिवारी, कार्यक्रम अधिकारी डॉक्टर सरस्वती वर्मा, डॉक्टर स्वेतलाना नागल, डॉ शीलभद्र कुमार एवं महाविद्यालय के समस्त अध्यापकगण, कार्यालय स्टाफ ने हर्ष जताते हुए उसके मार्ग प्रशस्ति के लिए शुभकामनाएं दी।

2 सगे भाइयों की डूबने से मौत

तैरना नहीं आता था और चचेरे भाई के साथ नहाने चले गए तालाब

रायगढ़। छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में एक हृदय विदारक घटना सामने आई है। तालाब में डूबने से 2 सगे भाइयों की मौत हो गई। दोनों भाई घर में किसी को बताए बिना ही अपने चचेरे भाई के साथ तालाब नहाने चले गए। नहाने के दौरान दोनों गहरे पानी में चले गए। दोनों को तैरना नहीं आता था। दोनों बच्चों के डूबने की जानकारी उसके चचेरे भाई ने घर आकर दी। परिजन तालाब की तरफ दौड़े, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी। लोगों की मदद से बच्चों को तालाब से बाहर निकाला गया। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस मामले की जांच कर रही है। हादसा खरसिया चौकी क्षेत्र में हुआ है। पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक महका गांव निवासी मुकेश शर्मा फर्नीचर व्यापारी हैं। उनका बेटा श्याम शर्मा (12 वर्ष) और सागर शर्मा (10 वर्ष) की मौत हुई है। दोनों बच्चे अपने चचेरे भाई सुमित शर्मा (13 वर्ष) के साथ घर के पास स्थित तालाब में नहाने गए थे। थोड़ी देर बाद सुमित घर लौटा और दोनों भाइयों के तालाब में डूबने की जानकारी दी। परिजन दौड़कर मौके पर पहुंचे। ग्रामीणों के सहयोग से दोनों बच्चों की तलाश शुरू की गई। दोनों बच्चों को बाहर निकाला गया और सिविल अस्पताल खरसिया लेकर गए, जहां डॉक्टरों ने उन्हें प्राथमिक जांच के बाद मृत घोषित कर दिया।

पिता निकला पुत्र का हत्यारा, बेमेतरा पुलिस ने सुलझाई अंधे कत्ल की गुत्थी

जोहार छत्तीसगढ़-बेमेतरा।

प्रार्थी अर्जुन साहू उम्र 65 साल साकिन बिटकुली चौकी चंदनू थाना नांदघाट ने रिपोर्ट दर्ज कराया कि अज्ञात आरोपी द्वारा किशन साहू उम्र 19 साल की हत्या करने की नियत से धारदार वस्तु से गले में हमला कर चोंट पहुंचा कर मृत्यु कारित करने की रिपोर्ट पर थाना चंदनू में मार्ग एवं अपराध क्रमांक 168/2022 धारा 302 भादवि कायम कर विवेचना में लिया गया।

घटना की सूचना मिलने पर पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेन्द्र सिंह, अति. पुलिस अधीक्षक पंकज पटे, अति. पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन एवं थाना चंदनू प्रभारी उप निरीक्षक अंजोर सिंह साहू द्वारा तत्काल मौके का मुआयना किया गया। मुआयना करने पर मृतक की हत्या करना अनेकानेक संदेहों को जन्म दे रहा था तथा यह भी प्रतीत हुआ कि घटना किसी करीबी जानकार व्यक्ति द्वारा ही किया गया है। मामले की गंभीरता को मद्देनजर रखते हुए पुलिस महानिरीक्षक दुर्ग रेंज आईजीपी बीएन मीणा भापुसे के सतत मॉनिटरिंग एवं पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेन्द्र सिंह द्वारा अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पंकज पटेल को निर्देशित कर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन के नेतृत्व में एक टीम गठित की गई। जिसमें चौकी चंदनू प्रभारी उप निरीक्षक अंजोर सिंह साहू एवं सउनि अरविंद शर्माए प्रधान आरक्षक रामेश्वर मांडले की टीम को अज्ञात हत्यारे की पतासाजी हेतु लगाया गया। हत्या के प्रकरण में विवेचना के दौरान एवं परीस्थितिजन्य साक्ष्य के अधार पर मृतक के परिजन एवं आसपास के लोगो से पुछताछ की गई। मौके पर लगातार पुलिस टीम की मौजूदगी एवं ग्राम बिटकुली में मृतक के बारे में पूछताछ करने पर अन्य कई ऐसी बाते उजागर हुई जो संदेह को जन्म देती थी। पुलिस अधीक्षक बेमेतरा धर्मेन्द्र सिंह, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पंकज पटेल के मार्गदर्शन एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रामकुमार बर्मन के नेतृत्व में जो टीम गठित हुई थी उनका मौके पर लगातार बने रहने एवं वैज्ञानिक तथा पुरानी पद्धति से मौके को ना छोड़ना लगातार हत्या के संबंध में पूछताछ करते रहना और आरोपी पता साजी हेतु उसके रिश्तेदार परिवार आदि के यहां लगातार पुलिस के पुछताछ करने से पुलिस का दबाव बना। पुलिस के लगातार प्रयास से प्रकरण में विवेचना के दौरान परीस्थितिजन्य साक्ष्य के अधार पर 15 मई 2022 को मृतक का पिता संदेही नकुल साहू उम्र 54 साल साकिन बिटकुली से पुछताछ करने पर अपराध घटित करना स्वीकार करते हुए बताया कि मृतक पुत्र कही भी आने जाने के लिए मोटर सायकल की मांग करता था आरोपी पिता द्वारा नही दे सकने कहने पर मृतक पुत्र गाली गलौच कर परेशन करता था घटना दिनांक को भी आरोपी पिता द्वारा मृतक पुत्र को गांव जाने कहने पर मोटर सायकल के बिना नही जाना और बात नही मानने के कारण आरोपी आवेश में आकर गुस्से से पत्थर ;लोढाद्ध से फेककर सिर को मारने से घायल होने पर हसिया से गले को काट कर हत्या करना बताया। आरोपी नकुल साहू पिता स्व.जग्गु राम साहू उम्र 54 साल साकिन बिटकुली थाना चंदनू जिला बेमेतरा को 15 मई 2022 को विधिवत गिरफ्तार कर 16 मई 2022 को माननीय न्यायालय बेमेतरा पेश किया गया। इस वर्ष बेमेतरा पुलिस ने बड़ी सफलता हासिल करते हुए लगातार थाना नांदघाट, चंदनूए मारो क्षेत्र में हुए अंधे कत्ल की गुत्थी सुलझाई है जिसमें थाना नांदघाट, चंदनू,, मारो क्षेत्र में हत्या के 06 मामले दर्ज किये गये थे उक्त सभी हत्या के मामले की गंभीरता को मद्देनजर रखते हुए बेमेतरा पुलिस ने एसपी धर्मेन्द्र सिंह के नेतृत्व में सुलझाई है। उक्त कार्यवाही में थाना चंदनू प्रभारी उप निरीक्षक अंजोर सिंह साहू, सउनि अरविंद शर्मा, प्रधान आरक्षक रामेश्वर माण्डले, आरक्षक विनोद पात्रे, इंद्रजीत पाण्डेय एवं थाना चंदनू स्टाफ सउनि राजेश ठाकुर, आरक्षक घनश्याम साहू, जितेन्द्र वर्मा, निरंजन वैष्णव, दीपक ठाकुरए दिनेश साहू, गजानंद पटेल एवं अन्य थाना स्टाफ की सराहनीय भुमिका रही।

अनुपमा में एंट्री मारने वाले हैं मोहसिन खान? वायरल तस्वीरों को देख कन्फ्यूज हुए फैन्स

रूपाली गांगुली का सुपरहिट सीरियल अनुपमा पिछले 2 साल से लोगों को एंटरटेन करता आ रहा है। राजन शाही के इस सीरियल में रूपाली गांगुली सुधांशु पांडे और गौरव खन्ना मेन रोल निभाते हैं। बीते 2 सालों में इस शो से कई कलाकार जुड़े और कइयों से इसे अलविदा भी कहा।

पिछले कुछ घंटे से सोशल मीडिया पर एक्टर मोहसिन खान की कुछ ऐसी तस्वीरें और वीडियो वायरल हो रहे हैं, जिसे देखकर लोग अनुमान लगा रहे हैं कि वह जल्द ही अनुपमा में एंट्री मारेंगे। इन तस्वीरों में उनके साथ एक्ट्रेस अनेरी वजानी नजर आ रही हैं। सीरियल अनुपमा में अनेरी वजानी मालविका का किरदार निभाती हैं।

ये रिश्ता क्या कहलाता है को अलविदा कहने के बाद मोहसिन खान अभी तक म्यूजिक वीडियोज का ही हिस्सा बनते रहे हैं। कुछ समय पहले ही खबरें आई थी कि मोहसिन खान जल्द ही एक वेब सीरीज में नजर आएंगे। इससे पहले ही उनके फैन्स अनुमान लगा रहे हैं कि वह अनुपमा में एंट्री लेने वाले हैं। दरअसल अनुपमा की कहानी अब एक बार फिर से मालविका के किरदार की ओर मुड़ने वाला है। ऐसे में फैन्स को बार-बार यही लग रहा है कि मोहसिन खान की एंट्री अनुपमा में होने वाली है। एक यूजर ने उनके लिए कॉमेंट किया है, अनुपमा में आप आ जाओगे तो मजा ही आ जाएगा। एक दूसरे शख्स ने लिखा है, अगर यह सच है तो अबसे अनुपमा का एक भी एपिसोड मिस नहीं करेंगे। वैसे अंदाजा यह भी लगाया जा रहा है कि मोहसिन खान और अनेरी वजानी नए म्यूजिक वीडियो में नजर आने वाले

रिश्ता टूटा

आमिर के भांजे इमरान खान पत्नी अवंतिका मलिक से लेंगे तलाक, 2019 से अलग रह रहा है कपल

आमिर खान के भांजे और बॉलीवुड एक्टर इमरान खान की पत्नी अवंतिका मलिक ने तलाक लेने का फैसला कर लिया है। कपल पिछले कई सालों से अलग रह रहा था। हालांकि दोनों ने शादी बचाने की कई कोशिश की, लेकिन सब असफल रहा। इसके बाद अब रिपोर्ट्स के मुताबिक दोनों ने अपनी शादी से अलग होने का फैसला किया है और जल्द ही डाइवोर्स के लिए केस फाइल कर सकते हैं।

इमरान-अवंतिका लेंगे तलाक

रिपोर्ट्स के अनुसार, कपल के करीबी रिश्तेदारों और दोस्तों ने दोनों के बीच सब ठीक करने के लिए कई कोशिश कीं। सब इमरान खान और अवंतिका मलिक को फिर से मिलाने की और वापस एक साथ लाने के लिए सभी ने खूब मेहनत की, लेकिन दोनों पर इसका कोई असर नहीं पड़ा। वहीं अपनी शादी को और इमरान को अवंतिका एक और मौका देना चाहती थीं, लेकिन उनकी कोई भी कोशिश काम नहीं आई।

2019 में छोड़ा था घर

इमरान-अवंतिका की शादी में पिछले दो साल से ही तनाव की खबरें आ रही हैं। 24 मई 2019 को अवंतिका इमरान का घर छोड़कर अलग रहने चली गई थीं। वो अपनी बेटी इमारा के साथ अपने माता-पिता के घर पर रह रहीं हैं। दोनों के परिवारों ने इमरान और अवंतिका के बीच सुलह करवाने की कोशिश की लेकिन बात नहीं बनी।

शादी के पहले एक-दूसरे को डेट किया- इमरान और अवंतिका ने 2011 में शादी की थी। उनकी बेटी इमारा का जन्म जून 2014 में हुआ। इमारा की उम्र 7 साल है। इमरान-अवंतिका ने अपनी शादी के पहले एक दूसरे को लंबे समय तक डेट किया था। अलग होने के बाद, दोनों पिछले साल मुंबई के एक होटल में शादी के फंक्शन में मिले थे।

श्रीराम ने रोमांटिक पोस्ट शेयर कर पत्नी माधुरी दीक्षित को विश किया बर्थडे, बोले- दुनिया की सबसे सुंदर महिला

एक्ट्रेस माधुरी दीक्षित आज अपना 55वां जन्मदिन सेलिब्रेट कर रही हैं। इस खास मौके पर उनके फैंस, फ्रेंड्स और फैमिली मेंबर्स सोशल मीडिया पर पोस्ट शेयर कर उन्हें बर्थडे विश कर रहे हैं। इस बीच माधुरी के पति श्रीराम नेने ने भी एक प्यार भरा पोस्ट शेयर कर पत्नी को बर्थडे विश किया है।

डॉ श्रीराम नेने ने पत्नी माधुरी के साथ की एक फोटो शेयर कर लिखा, दुनिया की सबसे सुंदर महिला, मेरी पत्नी, मेरी सोलमेट और मेरी सबसे अच्छी दोस्त को जन्मदिन की ढेरों शुभकामनाएं। मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूं और सबसे बेस्ट चीजें ही डिजर्व करती हो। मैं तुमको इस बर्थडे की बधाई दे रहा हूं और उम्मदी करता हूं कि आने वाले साल बेहतरीन हो और हम साथ हों। हैप्पी बर्थडे सोलमेट। उनके इस पोस्ट पर कई फैंस ने भी धक धक गर्ल को बधाइयां दी हैं।

साल 1999 में हुई थी श्रीराम-माधुरी की शादी

बता दें कि श्रीराम पेशे पेशे से कैलिफोर्निया के लॉस एंजेलेस में एक कार्डियोवैस्कुलर सर्जन हैं। माधुरी दीक्षित ने एक बार बताया था कि उनके पति को बॉलीवुड के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। श्रीराम और माधुरी दोनों की 17 अक्टूबर 1999 को कैलिफोर्निया में शादी हुई थी। और मुंबई में रिसेप्शन हुआ था। दोनों के रिसेप्शन में दिलीप कुमार, सायरा बानो और श्रीदेवी जैसे सितारों के अलावा कई राजनेता भी शामिल हुए थे। लेकिन श्रीराम इनमें से किसी को पहचान ही न सके। सिमी ग्रेवाल को दिए एक इंटरव्यू में माधुरी ने खुलासा किया था कि नेने सिर्फ अमिताभ बच्चन को ही पहचान सकते थे, क्योंकि उन्होंने बचपन से ही उनकी फिल्में देखी थीं।

नेपोटिज्म पर धाकड़ गर्ल

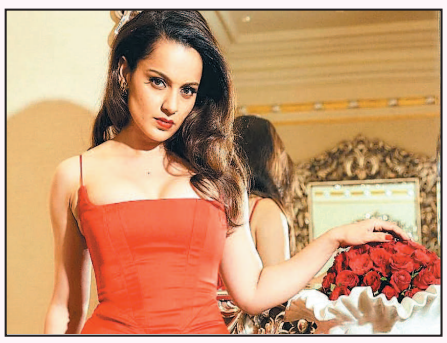

कंगना रनोट बोलीं- उबले हुए अंडे की तरह दिखते हैं स्टार किड्स, लोग उनसे रिलेट नहीं कर पाते

एक्ट्रेस कंगना रनोट आए दिन बॉलीवुड में नेपोटिज्म को लेकर बयान देती रहती हैं। अब हाल ही में कंगना रनोट ने एक बार फिर स्टार किड्स पर निशाना साधते हुए नेपोटिज्म पर अपनी राय व्यक्त की है। एक इंटरव्यू में बातचीत के दौरान कंगना ने कहा कि उन्हें लगता है कि हिंदी फिल्मों में स्टार किड्स को दिए गए अवसर बाहरी लोगों (ऑटसाइडर्स) को वंचित कर देते हैं। इतना ही नहीं उन्होंने यह भी कहा है कि बॉलीवुड के स्टार किड्स उबले हुए अंडों की तरह दिखते हैं। कंगना को यह भी लगता है कि बॉलीवुड की फिल्में इसलिए नहीं चल रही हैं, क्योंकि दर्शक स्टार किड्स से रिलेट नहीं कर पा रहे हैं। जिन्हें कई हिंदी फिल्मों में लीड एक्टर और एक्ट्रेस के रूप में कास्ट किया जा रहा है। दर्शकों के साथ उनकी रिलेटेबिलिटी की कमी के कारण ही हिंदी फिल्में साउथ सिनेमा से हार रही हैं। कंगना रनोट से इंटरव्यू के दौरान सवाल पूछा गया कि साउथ इंडियन सिनेमा को बॉलीवुड की तुलना में क्या अधिक सफल बनाता है? इसके जवाब में कंगना ने कहा, जिस तरह से उनका अपने दर्शकों के साथ जुड़ाव है, वह बहुत मजबूत है। मैं फैंस नहीं कहूंगी, यह उससे कहीं अधिक है। हमारे साथ क्या होता है कि उनके (स्टार किड्स) बच्चे पढ़ाई पूरी करने के लिए विदेश चले जाते हैं। वे अंग्रेजी में बात करते हैं, केवल हॉलीवुड फिल्में देखते हैं। वे केवल चाकू और कांटे से खाते हैं और अलग तरह से बात करते हैं। तो, वे कैसे जुड़ेंगे? देखने में भी अजीब से ऐसे लगते हैं, जैसे उबले हुए अंडे हों। उनका पूरा लुक बदल गया है, इसलिए लोग रिलेट नहीं कर सकते। मेरा मतलब किसी को ट्रोल करना नहीं है।

भारत पहली बार कान्स फिल्म फेस्टिवल के कंट्री ऑफ ऑनर में शामिल हुआ, 6 इंडियन फिल्म की स्क्रीनिंग

2022 का कान्स फिल्म फेस्टिवल, कई मायनों में भारत के लिए अहम है। पहली बार भारत कंट्री ऑफ ऑनर के रूप में शामिल होगा। गौरतलब है कि इसी साल से कान्स फिल्म फेस्टिवल में कंट्री ऑफ ऑनर की परंपरा शुरु हुई है। फ्रांस में होने वाले कान्स फिल्म फेस्टिवल में दुनियाभर की चुनिंदा फिल्मों और डॉक्यूमेंट्री की स्क्रीनिंग की जाती है। बेस्ट फिल्म और कलाकारों को सम्मानित किया जाता है। कान्स फिल्म फेस्टिवल में कुल छह भारतीय भाषाओं की फिल्मों को प्रदर्शित किया जाएगा। इनमें से एक फिल्म रॉकेट्री -द नांबी इफेक्ट है! तो आप अब ये सोच रहे होंगे कि अन्य कौन-कौन सी इंडियन फिल्में हैं? और यहां तक ये फिल्में कैसे पहुंची?

खेल

152 की स्ट्राइक रेट से खेल रहे हैं वॉर्नर, 21 विकेट चटका चुके हैं रबाडा

आज पंजाब किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच शाम 7-30 बजे से मुंबई के डी वाई पाटिल स्टेडियम में IPL 15 का 64वां मुकाबला खेला जाएगा। दोनों ही टीमों ने 12 मैच खेलकर 6 मुकाबलों में जीत हासिल की है और प्लेऑफ की दौड़ में बनी हुई हैं। DC का नेट रनरेट +0.210 है, तो वहीं PBKS का नेट रनरेट +0.023 है।

जो टीम आज का मुकाबला बड़े अंतर से जीतने में सफल रहेगी, उसकी प्लेऑफ में पहुंचने की संभावना बढ़ जाएगी। दोनों ही टीमों में पावर हिटर बल्लेबाज और स्पीड स्टार गेंदबाज मौजूद हैं। आइए, जानने का प्रयास करते हैं किन खिलाड़ियों को टीम में शामिल करने से आप अधिक फैंटेसी पॉइंट्स जीत सकते हैं।

जॉनी बेयरस्टो और ऋषभ पंत को फैंटेसी टीम में बतौर विकेटकीपर चुना जा सकता है। जॉनी बेयरस्टो ने जिस तरह बेंगलुरु के खिलाफ छक्कों की बौछार की, उनका वह अंदाज फिर एक बार देखने को मिल सकता है। ऋषभ पंत अच्छे टच में नजर आए हैं। हालांकि, वह लंबी पारी नहीं खेल सके हैं। टीम के लिए इस महत्वपूर्ण मुकाबले में पंत विकेट पर लंबे अरसे तक रुक कर मुकाबले का अंत करने की पूरी कोशिश करेंगे। डेविड वॉर्नर , शिखर धवन, रॉवमैन पॉवेल और मयंक अग्रवाल को बतौर बल्लेबाज लिया जा सकता है। वॉर्नर लगातार दिल्ली के टॉप ऑर्डर में अपने प्रदर्शन से टीम को दमदार शुरुआत दे रहे हैं। वह पंजाब के खिलाफ एक और आक्रामक पारी खेल सकते हैं। शिखर धवन का बल्ला इस सीजन जमकर बोल रहा है। परिणाम यह है कि दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ होने वाली टी-20 सीरीज में उन्हें कप्तान बनाने की बात सामने आ रही है। ऐसे में गब्बर एक और यादगार पारी खेल सकते हैं। सिक्स हिटिंग मशीन के रूप में फेमस हो चुके रॉवमैन पॉवेल दिल्ली के मिडिल ऑर्डर में आकर PBKS के गेंदबाजो की बखिया उधेड़ सकते हैं।

रसेल की तूफानी पारी से कोलकाता की उम्मीदें कायम

पुणे । आंद्रे रसेल की 28 गेंदों पर चार छक्कों से सजी नाबाद 49 रन की तूफानी पारी और 22 रन पर तीन विकेट की शानदार गेंदबाजी की बदौलत कोलकाता नाईट राइडर्स ने सनराइजर्स हैदराबाद को करो या मरो के आईपीएल मुकाबले में 54 रन से हराकर प्लेऑफ में पहुंचने की अपनी उम्मीदों को कायम रखा।

कोलकाता ने 20 ओवर में छह विकेट पर 177 रन का चुनौतीपूर्ण स्कोर बनाया और हैदराबाद को आठ विकेट पर 123 रन पर रोक दिया। कोलकाता की 13 मैचों में यह छठी जीत है और उसके 12 अंक ही गए हैं और वह छठे स्थान पर पहुंच गयी है । दूसरी तरफ हैदराबाद को 12 मैचों में सातवीं हार का सामना करना पड़ा है और वह आठवें स्थान पर खिसक गयी है।

सातवें नंबर पर खेलने आये रसेल ने 28 गेंदों पर तीन चौके और चार छक्के उड़ाते हुए नाबाद 49 रन ठोके और कोलकाता को एक लड़ने लायक स्कोर तक पहुंचाया जो अंत में मैच विजयी साबित हुआ।

रसेल ने अपने चार में से तीन छक्के तो ऑफ स्पिनर वाशिंगटन सुन्दर के पारी के आखिरी ओवर में मारे। उन्होंने पारी की आखिरी गेंद पर छक्का उड़ाकर पारी का समापन किया।

रसेल ने सैम बिलिंग्स के साथ छठे विकेट के लिए 63 रन की साझेदारी की। बिलिंग्स ने 29 गेंदों पर 34 रन में तीन चौके और एक छक्का लगाया। ओपनर अजिंक्या रहाणे ने 24 गेंदों में तीन छक्कों की मदद से 28 और नीतीश राणा ने 16 गेंदों में तीन छक्कों के सहारे 26 रन बनाये। कप्तान श्रेयस अय्यर ने नौ गेंदों में दो चौकों के सहारे 15 रन बनाये।

एक नजर

दिल्ली कैपिटल्स के लिए गुड न्यूज, पृथ्वी शॉ को अस्पताल से मिली छुट्टी

नई दिल्ली । दिल्ली कैपिटल्स के सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ को टाइफाइड के उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है। फ्रेंचाइजी ने इसकी जानकारी देते हुए बताया कि 22 साल के सलामी बल्लेबाज पृथ्वी को इस महीने की शुरुआत में तेज बुखार के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया था। पृथ्वी ने दिल्ली कैपिटल्स की ओर से पिछला मुकाबला एक मई को लखनऊ सुपर जाइंट्स के खिलाफ खेला था और तब से वह टीम के तीन मुकाबलों में नहीं खेल पाए हैं। पृथ्वी की वापसी से दिल्ली की टीम को मजबूती मिलेगी। उन्होंने स्वयं अस्पताल से इंस्टाग्राम पर लिखा था कि उन्हें जल्द वापसी की उम्मीद है। दिल्ली कैपिटल्स के सलामी बल्लेबाज पृथ्वी शॉ को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है जहां उनका टाइफाइड का उपचार किया गया। फ्रेंचाइजी की चिकित्सा टीम पृथ्वी की हालत पर नजर रख रही है। फ्रेंचाइजी ने कहा, पृथ्वी टीम होटल लौट चुके हैं जहां वह अभी उबर रहे हैं और दिल्ली कैपिटल्स की चिकित्सा टीम उनकी हालत पर नजर रखे हुए है। पृथ्वी की गैरमौजूदगी में दिल्ली की टीम फॉर्म में चल रहे डेविड वॉर्नर के लिए उम्दा सलामी जोड़ीदार ढूंढने में नाकाम रही। मनदीप सिंह और श्रीकर भरत दोनों शीर्ष क्रम में नाकाम रहे।पृथ्वी ने मौजूदा आईपीएल सत्र में अब तक नौ मैच में 28.77 के औसत से 259 रन बनाए हैं और इस दौरान उनका स्ट्राइक रेट 160 रहा। दिल्ली की टीम अभी 12 मैच में 12 अंक जुटा चुकी है और प्ले आफ में जगह बनाने के लिए उसे अपने अगले दोनों मैच जीतने होंगे।

प्लेऑफ में पहुंचने उतरेगी लखनऊ सुपर जायंट्स

मुंबई । लखनऊ सुपर जायंट्स पहली बार आईपीएल में भाग ले रही है और अब तक टीम का प्रदर्शन बेहद शानदार रहा है। टीम का सामना आज रविवार को डबल हेडर के दूसरे मुकाबले में मुंबई के ब्रेबोर्न स्टेडियम में राजस्थान रॉयल्स से होना है। 15वें सीजन में लगातार चार जीत के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर चल रही लोकेश राहुल की अगुआई वाली लखनऊ सुपर जायंट्स अब प्लेऑफ में पहुंचने में से सिर्फ एक जीत दूर है।लखनऊ की टीम ने पिछले मैच में गुजरात टाइटंस के खिलाफ हार के साथ अपना नंबर एक स्थान इस टीम को गंवा दिया था। टीम 16 अंक के साथ दूसरे स्थान पर चल रही है। रून्न के कप्तान केएल राहुल 12 मैच में 459 रन के साथ टूर्नामिंट के दूसरे सबसे सफल बल्लेबाजों में से एक हैं और अब तक दो शतक और इतने ही अर्धशतक जड़ चुके हैं। डिकॉक ने अब तक तीन अर्धशतक की मदद से 12 मैच में 355 रन बनाए हैं।रॉयल्स की टीम भी पिछले मैच में दिल्ली कैपिटल्स के खिलाफ आठ विकेट की करारी हार के बाद वापसी करके प्लेऑफ की में जगह बनाने का अपना दावा मजबूत करने की कोशिश करेगी। सुपर जायंट्स की टीम अगर राजस्थान के खिलाफ जीत दर्ज करती है तो उसकी प्लेऑफ में जगह पक्की हो जाएगी। वहीं, राजस्थान रॉयल्स की टीम भी अगर जीत दर्ज करती है तो अंतिम चार में जगह बनाने की तरफ एक और कदम बढ़ा लेगी। राजस्थान के लिए जोस बटलर 12 मैच में तीन शतक और इतने ही अर्धशतक की बदौलत 625 रन बना चुके हैं। कप्तान संजू सैमसन ने अब तक 12 मैच में दो अर्धशतक की मदद से 327 रन बनाए हैं।

15 बार पंजाब और 14 दफा दिल्ली के हाथ लगी है बाजी, डी वाई पाटिल स्टेडियम में होगा मुकाबला

मुंबई। आज पंजाब किंग्स और दिल्ली कैपिटल्स के बीच शाम 7-30 बजे से मुंबई के डी वाई पाटिल स्टेडियम में IPL 15 का 64वां मुकाबला खेला जाएगा। दोनों ही टीमों ने 12 मैच खेलकर 6 मुकाबलों में जीत हासिल की है और प्लेऑफ की दौड़ में बनी हुई हैं।

DC का नेट रनरेट +0.210 है, तो वहीं PBKS का नेट रनरेट +0.023 है। जो टीम आज का मुकाबला बड़े अंतर से जीतने में सफल रहेगी, उसकी प्लेऑफ में पहुंचने की संभावना बढ़ जाएगी।

दिल्ली के लिए कुलदीप यादव बदल सकते हैं गेम

दिल्ली ने आखिरी मुकाबले में राजस्थान के खिलाफ 8 विकेट से बड़ी जीत दर्ज की है। ऐसे में खिलाड़ियों में उत्साह अपने चरम पर होगा। हालांकि, परेशानी ओपनिंग जोड़ी को लेकर लगातार बनी हुई है। अगर पृथ्वी शॉ वापसी करते हैं, तो टीम के लिए लाभकारी होगा। ऋषभ पंत से उम्मीद रहेगी कि सीजन के आखिरी फेज में वह पुराने अंदाज में बल्लेबाजी करते नजर आएं। कुलदीप यादव की स्पिन पंजाब के खिलाफ टीम के लिए मददगार साबित हो सकती है। एनरिक नॉर्त्या अपनी एक्सप्रेस स्पीड से

1983 की कामयाबी जैसी है थॉमस कप की जीत

सुनील गावस्कर बोले- यह जीत देश में बैडमिंटन क्रांति लाने वाली है, अब इस खेल में भी होगा भारत का राज

मुंबई। 1983 की विश्व विजेता टीम के सदस्य सुनील गावस्कर ने थॉमस कप बैडमिंटन की जीत की तुलना 1983 क्रिकेट वर्ल्ड कप जीत से की है। उन्होंने कहा कि भारतीय पुरुष बैडमिंटन टीम की यह जीत देश में बैडमिंटन में क्रांति लाने वाली है। यह 1983 क्रिकेट वर्ल्ड कप की जीत जैसा क्षण था। उसके बाद भारत में क्रिकेट युग की शुरुआत हुई थी। अब देश में बैडमिंटन युग की शुरुआत होने वाली है। इससे भारत बैडमिंटन में भी अपनी धाक जमा लेगा।

गावस्कर ने कहा कि सुबह एक दुखद खबर साइमंड्स के निधन की खबर आई, तो दोपहर में एक अच्छी खबर आई। भारतीय पुरुष टीम 73 साल बाद पहली बार थॉमस कप जीत गई, वह भी डिफेंडिंग चैंपियन और 14 बार खिताब पर कब्जा जमा चुकी इंडोनेशिया को हराकर।

गावस्कर ने आगे कहा, बैडमिंटन मुझे काफी पसंद है। अगर टी-20 मैच और बैडमिंटन का मैच हो रहा है तो बैडमिंटन के मैच को देखना पसंद करूंगा। बैडमिंटन काफी कठिन खेल है। इसमें आपको पैरों में काफी ताकत की जरूरत है। वहीं आपके अंदर धैर्य और शारीरिक लचीलापन होना भी अहम है।

नियमों का उल्लंघन करने पर एक क्रेशर प्लांट को किया गया सील और चार को मिली नोटिस

गौण खनिजों के अवैध परिवहन के मामले में दस वाहन जब्त

जगदलपुर। कलेक्टर श्री रजत बंसल के निर्देश पर जिला खनिज जांच दल द्वारा बस्तर जिले के विभिन्न क्षेत्र में अवैध परिवहन करने वाले वाहनों एवं पिपलावण्ड तहसील बस्तर क्षेत्र में संचालित खदानों का जांच निरीक्षण किया गया ।

प्रभारी खनि अधिकारी श्री हेमन्त चेरपा ने बताया कि 13 मई को बस्तर तहसील के पिपलावण्ड क्षेत्र में संचालित उत्खननपट्टों की जांच की गयी जिसमें पट्टेदार श्री अंबर पवार द्वारा संचालित खदान को छत्तीसगढ़ गौण खनिज नियमावली 2015 के नियमों के उल्लंघन पाये जाने पर संचालित क्रेशर यूनिट एवं पावर यूनिट को सीलबंद किया गया तथा इसके अतिरिक्त ग्राम पंचायत पिपलावण्ड क्षेत्र में संचालित अन्य चार क्रेशर संचालकों के विरूद्ध अन्य पट्टा शर्तों के उल्लंघन पर कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

इसके साथ ही खनिज जांच दल द्वारा दिनांक 12 मई से 16 मई तक जिले के बस्तर, जगदलपुर, कोड़ेनार तथा दरभा क्षेत्र में औचक निरीक्षण के दौरान गौण खनिज चूनापत्थर एवं मिट्टी ईंट का अवैध परिवहन कर रहे 10 वाहनों को पुलिस अभिरक्षा थाना बस्तर कामानार, कोड़ेनार एवं सिटी कोतवाली जगदलपुर में सौंपी गई। इसके साथ ही ग्राम पंचायत टलनार में रेत के अवैध उत्खनन व परिवहन की संभावना को देखते हुए ग्राम पंचायत के सरपंच को जरूरी उपाय करने के निर्देश दिए गए हैं। इन कार्यवाही के दौरान खनि निरीक्षक श्री देवेंद्र साहू, सुपरवाइजर श्री बालमुकुंद मिश्रा, सिपाही श्री राधेश्याम विश्वकर्मा तथा सीताराम नेताम मौजूद थे।

आर्यावर्त स्कूल पाटन का 10वी, 12वी परीक्षा परिणाम शतप्रतिशत

अमन कश्यप को 12 वी बोर्ड में मिला प्रदेश में दसवा स्थान

पाटन। 20 वर्षों से संचालित आर्यावर्त हॉयर सेकंडरी स्कूल ने विगत कई वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में गौरव हासिल करते हुए इतिहास रचा है। बीते 2018 के सत्र में 12 वी बोर्ड में विद्यालय की छात्रा कु यशस्वी वर्मा पिता संतोष वर्मा ने 5 वा स्थान हासिल कर परिवार एवं विद्यालय को गौरवान्वित किया था । वहीं 2022 के हायर सेकेण्डरी परीक्षा (12वी) बोर्ड में अमन कश्यप पिता महेन्द्र कश्यप ग्राम चंगोरी निवासी ने 94.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पूरे छग प्रदेश में दसवां स्थान हासिल करते हुए परिवार, समाज ,विद्यालय एवं पूरे पाटन क्षेत्र को गौरवान्वित कर इतिहास रचा है ।इस प्रकार आर्यावर्त हायर सेकेण्डरी स्कूल पाटन जिला दुर्ग का हाई स्कूल एवं हायर सेकेण्डरी परीक्षा परिणाम शत प्रतिशत रहा । 10 वी बोर्ड में कुल 22 छात्र छात्राए सम्मिलित हुए जिसमे 17 प्रथम श्रेणी एवं 5 द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण हुए जिसमे साहिल वर्मा पिता महेश वर्मा चंगोरी ने 95 प्रतिशत प्राप्त कर कक्षा में प्रथम एवं अंजली कश्यप पिता महेन्द्र कश्यप चंगोरी ने 94.5 प्रतिशत प्राप्त कर द्वितीय स्थान तथा तुमिका साहू पिता लव कुमार साहू तीसरा स्थान

हासिल किया है। इसी प्रकार हायर सेकेण्डरी परीक्षा 12 वी बोर्ड में कुल 21 छात्र छात्राए शामिल हुए जिसमे 15 प्रथम श्रेणी एवं 6 द्वितीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए जिसमे अमन कश्यप पिता महेन्द्र कश्यप ने 94.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कक्षा में प्रथम तथा कु आल्या बिजौरा पिता विनोद बिजौरा ने 91.2 प्रतिशत प्राप्त कर द्वितीय स्थान प्राप्त कर विद्यालय का मान बढ़ाया है ।उत्तीर्ण समस्त विद्यार्थियों को जितेन्द्र वर्मा स्थायी सचिव भाजपा विधायक दल ने बधाई दी है। इस ऐतिहासिक उपलब्धि पर शाला प्रबन्धन समिति नवसृजन बहुआयामी शिक्षण संस्थान पाटन के अध्यक्ष दिलीप साहू, कोषाध्यक्ष जितेंद्र वर्मा ,अजय सिंगोर ,विनोद साहू, प्राचार्य हेमलता वर्मा प्रधान पाठक नारद सेन, जयप्रकाश साहू, संकल्प चंद्राकर ,प्रदीप वर्मा, भूपेंद्र धुरन्धर, सागर सोनी , सहित समस्त शिक्षकों ने बधाई प्रेषित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

तीन दिवसीय अंग प्रत्यारोपण शिविर का सफल आयोजन

गरियाबंद। मारवाड़ी युवा मंच की 27 महिलाओं ने युवा श्रीमति रचना जैन की अध्यक्षता एवं युवा श्रीमति संतोष अग्रवाल के मार्गदर्शन एवं समाज के साथ मिलकर मिलकर किया सफल आयोजन इस शिविर में 90 लोगों का कृत्रिम हाथ पैर लगाया गया,जिसमें से 9 लोगों का रोबोटिक हाथ भी लगाया गया, जिससे दिव्यांग भाई बहन 3 से 4 किलो तक का वजन अपने कृत्रिम हाथ से उठा पाएंगे

इस शिविर में गरियाबंद जिले से 8 लोगों का कृत्रिम अंग प्रत्यारोपण किया गया, जिसमे खट्टी निवासी 10 वर्षीय बालक कान्हा हल्बा का रोबोटिक हाथ लगाया गया- दिव्यांग कान्हा के हाथों में रोबोटिक हाथ लगते ही उसके चेहरे में खुशी की लहर आ गई और अपने रोबोटिक हाथो से सेल्फी खींचा जिसको देखकर उसके पिता के आंखो में खुशी के आंसू छलक गया

यह शिविर पूर्णता नि:शुल्क था जिसमें दिव्यांगों को इलाज, रहना, खाना-पीना सभी फ्री रहा

गरियाबंद जिले के लोगों के लिए आने जाने के लिए नि:शुल्क गाड़ी की व्यवस्था भी की गई थी, जिसमें सभी मरीज एवं उनके अटेंडर को भेजा गया सभी

दिव्यांगो ने जो कई महीनों वर्षों के बाद अपने पैरो पर खड़ा होने के कारण शिविर के आयोजकों के सेवा भाव को नमन किया.

इस शिविर को सफल बनाने में गरियाबंद से विकास पारख,हरीश भाई ठक्कर,अंकित जैन,भीम निषाद एवं छूरा से मनोज पटेल का विशेष योगदान रहा

शिविर में लाभार्थी मरीजों के नाम:-

1- श्री पारस कुबेर प्रसाद दुबे जी उम्र 39 वर्ष ग्राम पारागांव-गरियाबंद (एक पैर)
2- श्री घनश्याम पुनाराम देवांगन जी उम्र 53 वर्ष ग्राम पीपरछेड़ी गरियाबंद (एक पैर)
3- श्री वीरेंद्र चुम्मन लाल साहू जी उम्र 33 वर्ष ग्राम नवागांव-मगरलोड(एक पैर)
4- श्री कान्हा गिरधर हल्बा जी उम्र 10 वर्ष ग्राम खट्टी पांडुका (रोबोटिक हाथ)
5- श्री मोहन झरियार यादव जी उम्र 35 वर्ष ग्राम छुरा(एक पैर)
6- श्री अमृत समारू निषाद जी उम्र-53 वर्ष चोरभट्टी छूरा(दोनों पैर)
7- श्री जैनंद जामधर गोंड जी उम्र 25 वर्ष ग्राम मुडहीपानी-छुरा(एक पैर)
8- श्री शिव कुमार प्राणसिंग सेन जी उम्र 58 वर्ष ग्राम खैरझिटी छुरा(एक पैर)

रमन सिंह का पुतला फुंका:-

एनएसयूआई ने छत्तीसगढ़ के हर जिले में किया प्रदर्शन

पूर्व मुख्यमंत्री पर भारत माता के अपमान का आरोप

रायपुर। कांग्रेस के छात्र संगठन NSUI ने सोमवार शाम प्रदेश के सभी जिलों में प्रदर्शन किया। इस दौरान उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह का पुतला फूंका। प्रदर्शनकारियों ने पूर्व मुख्यमंत्री पर भारत माता के अपमान का आरोप लगाया। उनका कहना था, डॉ. रमन सिंह ने इसके लिए माफी नहीं मांगी तो आगे बड़े प्रदर्शन होंगे।

NSUI के प्रदेश अध्यक्ष नीरज पाण्डेय की अगुवाई में प्रदर्शनकारी शाम को रायपुर के डॉ. भीमराव आम्बेडकर चौक पर इकट्ठा हुए। यहां प्रदर्शनकारियों ने डॉ. आम्बेडकर की प्रतिमा के पास बैठकर नारेबाजी की। बाद में चौराहे पर पूर्व मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह का पुतला फूंका। NSUI के प्रदेश अध्यक्ष नीरज पांडे ने कहा, पिछले दिनों राजनांदगांव के टेडेसरा में हुए कार्यक्रम के दौरान भारत माता को जमीन पर रख कर अपमानित किया गया। इस घटना से भारतीय जनता पार्टी के लोग जो अपने आप को राष्ट्रभक्त कहते हैं उनके राष्ट्रवाद की असलियत सामने आ गई है। हमने डॉ. रमन सिंह को चेतावनी दी थी कि वे देश से इसके लिए माफी मांगे। उन्होंने अथवा भाजपा ने ऐसा नहीं किया। आज हमने पूरे प्रदेश में डॉ. रमन सिंह का पुतला दहन किया है। यदि वह अब भी माफी नहीं मांगेंगे आने वाले समय में भी हम उग्र आंदोलन करते रहेंगे। इस प्रदर्शन में उपाध्यक्ष अमित शर्मा, राष्ट्रीय संयोजक हनी बग्गा, प्रदेश महासचिव हेमंत पाल, जिलाध्यक्ष शांतनु झा, तुषार गुहा पूर्व जिला महासचिव प्रशांत गोस्वामी, निखिल बंजारी आदि शामिल हुए थे।

भारत माता की जिस तस्वीर को लेकर विवाद खड़ा हुआ है, वह खुद डॉ. रमन सिंह ने ही सोशल मीडिया पर डाली थी। यह राजनांदगांव के टेड़ेसरा में हुए भाजपा के एक आयोजन की फोटो थी। इसमें डॉ. रमन सिंह भाषण देते दिख रहे हैं। उनकी बाई ओर एक फोटो फ्रेम भी है जिसके केंद्र में भारत माता की तस्वीर बनी है। भाजपा के पितृ पुरुषों दीनदयाल उपाध्याय और श्यामा प्रसाद मुखर्जी की तस्वीर भी है। यह फोटो फ्रेम जमीन पर आड़ा रखा हुआ है।

एक नजर

रात्रिकालीन क्रिकेट प्रतियोगिता का 25 मई को होगा फरसगांव शुभारंभ

फरसगांव। फरसगांव नगर में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी यूथ स्पोर्ट्स क्लब फरसगांव के तत्वधान में रात्रिकालीन टेनिस बॉल क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन हाईस्कूल मैदान में किया जाना है इस प्रतियोगिता का शुभारंभ 25 मई को किया जाएगा क्रिक्रेट प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार 1,00,001 रूपए, द्वितीय पुरस्कार 50001 रूपए रखा गया है । साथ ही मेन ऑफ द, मेन ऑफ द सीरीज, बेस्ट बल्लेबाज, बेस्ट गेंदबाज, बेस्ट फील्डर जैसे कई पुरस्कार भी दिए जाएंगे जिस भी इच्छुक प्रतिभागी टीम को इस प्रतियोगिता में भाग लेना हो तो आयोजक समिति के सदस्यों से संपर्क कर हैं इस प्रतियोगिता में एंट्री लेने की अंतिम तिथि 23 मई रखी गई है ।

राजस्व अभिलेखों में हेराफेरी पर पटवारी निलंबित

जगदलपुर। राजस्व अभिलेखों में हेराफेरी के कारण भानपुरी में पदस्थ पटवारी उपेंद्र बघेल को निलंबित कर दिया गया है। उपेंद्र बघेल के खिलाफ निलंबन की यह कार्रवाई बस्तर अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) श्री ओमप्रकाश वर्मा द्वारा की गई है। उपेन्द्र बघेल के खिलाफ यह कार्यवाही तोकापाल तहसील के विभिन्न पटवारी हल्कों में पदस्थापना के दौरान शासकीय और निजी भूमि में की गई हेराफेरी के कारण की गई है।

निलंबन आदेश के अनुसार पटवारी श्री उपेन्द्र बघेल द्वारा पटवारी हल्का नंबर 15 मावलीभाटा स्थित खसरा नंबर 154 रकबा 3.28 हेक्टेयर पहाड़ चट्टान मद की भूमि को आसमन पिता आयतु जाति माड़िया के नाम पर दर्ज कर दिया गया है।

पटवारी हल्का नंबर 15 मावलीगुड़ा के ग्राम गुर्रम स्थित भूमि जिसका खसरा नंबर 223 224, 225, रकबा कमश: 0.42, 2.19, 0.99 हेक्टेयर की शासकीय भूमि छोटे झाड़ के जंगल मद में दर्ज भूमि को कमश: कमल नाग पिता मोती नाग जाति माहरा, रमेश पिता धनेश्वर, जाति ब्राम्हण एवं बली नागवंशी के नाम पर भूमि स्वामी हक में दर्ज कर शासकीय भूमि का हेरा-फेरी करते हुए भूईया में अंकित कर दिया गया है। इसके साथ ही न्यायालय तहसीलदार, तोकापाल में विचाराधीन राजस्व प्रकरण क्रमांक 2028150900016 / अ-6 / 2019-2020 में आवेदक सूर्यप्रताप सिंह विरूद्ध जोगा पिता देव निवासी ग्राम गुर्राम स्थित भूमि खसरा नंबर 222 / 1 को श्री उपेन्द्र बघेल द्वारा खसरा नंबर 222 / 1ख रकबा 2.00 हेक्टेयर भूमि में सूर्यप्रतापसिंह पिता भगवान दीन सिंह का नाम दर्ज कर दिया गया है । अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) तोकापाल से प्राप्त लिखित प्रतिवेदन (नस्ती में) अनुशंसा अनुरूप, निजी खाते की भूमि (प्रकरण जो न्यायालय तहसीलदार, तोकापाल में विचाराधीन) एवं शासकीय मद की भूमि के अभिलेख में किसी अधिकारी के संज्ञान में लाये बिना, स्वेच्छा पूर्वक निजी स्वार्थ पूर्ति हेतु अभिलेख में हेरा-फेरी की पुष्टि होने के कारण श्री उपेन्द्र बघेल को तत्काल प्रभाव से निलंबित किया गया है । निलंबन अवधि में श्री उपेन्द्र बघेल को नियमानुसार जीवन निर्वाह भत्ता का भुगतान किया जाएगा तथा उनका मुख्यालय तहसील कार्यालय बस्तर निर्धारित किया गया है ।

जमीन विवाद के चलते व्यापारी की सब्बल मारकर हत्या

धमतरी । जमीन विवाद को लेकर ग्राम अमेठी में एक व्यापारी की सब्बल मारकर हत्या कर दी गई। इस घटना के बाद गांव में सनसनी फैल गई। घटना के विरोध में शहर के व्यापारियों ने आरोपियों के खिलाफकड़ी से कड़ी कार्रवाई करने की मांग की है ।

पुलिस के मुताबिक सोमवार को यह घटना सुबह करीब 10 बजे की है । शहर के निकट ग्राम अमेठी में उस समय सनसनी फैल गई जब शहर के मैत्री विहार कॉलोनी निवासी गवर्नमेंट सप्लायर राजेंद्र पार्क (55) पिता स्वर्गीय घेवरचंद ग्राम अमेठी में स्थित अपनी जमीन पर काम कराने के लिए गया था । तीन मजदूरों को लेकर वह जैसे ही गांव पहुंचकर अपनी जमीन पर साफसफाई का काम कराने लगा, तभी पास में ही रहने वाले फिरंगी निर्मलकर के साथ जमीन विवाद को लेकर उसकी बहस हो गई। जैसे ही वह अपनी जमीन पर काम करना शुरू किया, तभी बिजली बंद हो गई। इस बीच पानी की जरूरत होने पर 3 में से 2 मजदूर रोको पानी लाने के लिए भेज दिया गया और मौके पर एक अन्य मजदूर नेतराम साहू निवासी भिरई मौजूद थे । पड़ोसी फिरंगी निर्मलकर से बहस होने के बाद देखते ही देखते दोनों के बीच हाथापाई शुरू हो गई । इस बीच फिरंगी लाल की पत्नी कुलेश्वरी बाई भी आ गई। बात बढ़ने के बाद फिरंगी लाल ने लोहे का रॉड उठा लाया और ताबड़तोड़ उसके सिर पर वार कर दिया । अचानक हुए इस बार से व्यवसायी राजेंद्र पारख वहीं ढेर हो कर गिर गए। गंभीर रूप से घायल राजेंद्र के सिर से भेजा बाहर निकल आया और चंद मिनटों में ही उनकी सांसें उखड़ गई । इस घटना के चश्मदीद मजदूर नेतराम साहू ने जब बीच बचाव के लिए आगे बढ़े तो फिरंगी लाल ने लोहे का रॉड लेकर उसकी ओर ही दौड़ पड़े , तब नेतराम ने किसी तरह वहां से भाग कर अपनी जान बचाई ।

बस्तर रेल आंदोलन की समीक्षा बैठक हुई, आय व्यय का विवरण किया जारी

जगदलपुर। बस्तर में रेल सुविधाओं को बढ़ाने को लेकर बस्तर रेल आंदोलन के सदस्यों की समीक्षा बैठक बस्तर चेंबर ऑफ कामर्स कार्यालय में हुई। बैठक में पिछले दो महीनों में रेल आंदोलन की सम्पूर्ण गतिविधियों के बारे में विचार विमर्श हुआ जिसमें पदयात्रा, रेल मंत्री से मुलाकात, डीआरएम से मुलाकात, कलेक्टर बस्तर के साथ बैठक शामिल थी। मुलाकात व उनकी विषय वस्तु पर चर्चा के साथ यह भी तय किया गया कि रेल सुविधाओं के विस्तार के लिए प्रयास लगातार जारी रखे जाएं। बैठक में पिछली गतिविधियों के दौरान हुए आय व्यय का विवरण चंद्रेश चांडक ने जारी करते हुए समस्त दानदाताओं के प्रति आंदोलन की ओर से आभार प्रकट किया गया, जिनके विशेष सहयोग से ही सारे आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हो सके।

आंदोलन की ओर से ग्रामीण अंचलों के पंचायत प्रतिनिधियों एवं अंतागढ़, नारायणपुर, कोंडागांव व बस्तर के सभी सहयोगियों के प्रति विशेष आभार प्रकट किया गया जिन्होंने रैली, सभा व भोजन की व्यवस्था पदयात्रा के दौरान की। पदयात्रा समापन की रैली, सभा हेतु समस्त अंचलवासियों, सभी समाज, संगठन, छात्र छात्राओं, बाहर से पधारे आंदोलन के सभी सहयोगी को भी साधुवाद प्रेषित किया गया। पदयात्रा में शामिल मीडिया साथियों का योगदान पदयात्रा से लेकर देश प्रदेश तक पहुंचाने हेतु विशेष आभार व्यक्त किया गया साथ ही समस्त समाज व संगठन के प्रति आभार प्रकट करते हुए भविष्य में भी सहयोग की अपेक्षा की गई। अब तक बस्तर रेल आंदोलन के बैनर तले चरणबद्ध प्रदर्शन, आयोजन के समस्त परोक्ष व अपरोक्ष सहयोगियों को धन्यवाद दिया गया।

24 लाख घरों में संपन्न होगा गायत्री महायज्ञ

जोहार छत्तीसगढ़-
जांजगीर।

अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में गृहे गृहे गायत्री यज्ञ का कार्यक्रम 15 मई रविवार व 16 मई सोमवार बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर प्रात: 9 बजे से 12 बजे तक भारत ही नहीं अपितु पूरे विश्व में 24 लाख घरों में अपने अपने घरों पर एक साथ गायत्री यज्ञ करने का विधान बना है बात उस समय की है जब सृष्टि बनी थी जीवन का कुछ ज्ञान ना होने के कारण मनुष्य उल्टे सीधे कार्य करता था दुखी बना रहता था एक दिन सब मिलकर ब्रह्मा के पास गए और अपना कष्ट बताया तथा उसका निवारण पूछा प्रजापिता ब्रह्मा ने कहा हे मनुष्यों मैंने जिस दिन तुम्हें पैदा किया उसी दिन यज्ञ की भी रचना की तुम सब यज्ञ के द्वारा देवताओं को प्रसन्न करो देवता तुम्हें धन धान्य से भर देंगे बस उसी दिन से यज्ञ हमारी संस्कृति का मूल आधार बन गया जन्म से लेकर मृत्यु तक हिंदुओं का कोई ऐसा संस्कार नहीं है जिसमें यज्ञ ना होता हो अंत में यज्ञ रुपी जीवन भी उसी यज्ञ में समर्पित कर दिया जाता है इसी तथ्य से यह भली-भांति समझा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति में यज्ञ का कितना महत्वपूर्ण स्थान है हिंदू धर्म में यज्ञ के स्थान पिता का है गायत्री सद्भावना है यह विश्वकर्मा देव संस्कृति के निर्माता यज्ञ पिता गायत्री माता एक के बिना दूसरा अपूर्ण हैं हिंदू धर्म की पूर्णता इन दोनों के समान प्रतिष्ठा से ही संभव हुई प्राचीन काल में जहां आश्रमों में सामूहिक संध्या वंदन का क्रम चला करता था वहां अखंड अग्नि स्थापित रहती थी उसी का परिणाम था कि यहां ऋतुएं सदा अनुकूल रहती थी पृथ्वी देवता व वरुण देवता मरूत देवता सभी प्रसन्न रहते थे परिपूर्ण अन्न पैदा होता था रसदार फलों की कोई कमी नहीं थी लोग बहुत स्वस्थ और मेधावी थे देश बड़ा समृद्ध था लोग खुशहाल थे। कभी-कभी देश की समृद्धि और समुन्नती असुर प्रवृत्ति

के पड़ोसी देशों को रास नहीं आते थे वह इस यज्ञ संस्कृति पर आक्रमण करते रहते थे जब जब ऐसा हुआ महापुरुष जन्में और यज्ञों की रक्षा की त्रेता में भगवान राम ने इसी तरह सुबाहु खरदूषण ताड़का आदि राक्षसों से यज्ञ की रक्षा की थी द्वापर में भगवान श्रीकृष्ण ने यज्ञ की रक्षा की थी मध्ययुग में एक बार इस देश पर जबरदस्त आक्रमण हुए फ ल स्वरुप अखंड अग्नियां बुझ गई यज्ञ परंपरा या तो समाप्त हो गई या फिर वह थोड़े से वाममर्गीयो के स्वार्थ का साधन मात्र रह गई देश सभी दृष्टि से निस्तेज और बर्बाद हो गया स्थिति ऐसी हो गई कि लोग धीरे-धीरे यज्ञ को भूल गए ऐसी स्थिति में परम पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी एक छोटे से गांव आवल खेड़ा आगरा में अवतरणष्हुआ पहले उन्होंने देश की स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी और देश की आजादी की संध्या बेला में गायत्री तपोभूमि मथुरा में अखंड अग्नि की स्थापना की पवित्र अग्नि सारे देश में फैल गई पांच कुंडीय नौ कुंडीय 24कुंडीय 51 कुंडीय 108 कुंडीय तक पहुंचे सारे राष्ट्र को एक सूत्र में आबंधकरनेवाले अश्व मेध यज्ञों की श्रृंखला ने तो सारे देश और विश्व में एक नई क्रांति खड़ा कर दी प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड तथा वैज्ञानिकों के सहयोग से वैज्ञानिक प्रयोग हुए और यह सिद्ध हो गया कि यज्ञ ना केवल वायु को शुद्ध करते हैं अपितु कैंसर जैसे रोगों को पैदा करने वाली जहरीली गैसों से भी मनुष्य को बचाते हैं पानी के बैक्टीरिया तथा रोगों के जीवाणुओं को नष्ट करने की यज्ञ में अभूतपूर्व क्षमता पाई गई है कुछ दिन पूर्व गुजरात के सूरत शहर में भयंकर प्लेग फैला तब गायत्री परिवार ने एक-एक दिन में 24- 24 यज्ञ सूरत के मोहल्ले मोहल्ले में संपन्न किए उससे प्लेग नियंत्रण में आया जो कार्य दवाएं नहीं कर सके वही यज्ञ ने किया फलस्वरूप तत्कालीन दिल्ली की सरकार तक ने सारे देश में हवन की सिफारिश की उन दिनों शांतिकुंज से सबसे अधिक हवन सामग्री सारे देश में गई कल्पना की जा सकती है यज्ञ मनुष्य जाति के लिए कितने बड़े वरदान हैं जहां कहीं भी यज्ञ हो रहा है वह उसी आंदोलन का एक भाग है आप सब को यह समझना होगा कि यह यज्ञ मनुष्य जीवन के लिए कितनी उपयोगी हैं वैज्ञानिक भी हैं आम आदमी भी इतनी बात समझ सकता है कि अपवित्र या गंदी वस्तु की गंध जिस प्रकार मन को परेशान कर देती है फूलों की अगरबत्ती सुगंध पाते ही मन प्रफुल्लित हो उठता है मन प्रसन्नता से भर जाता है विषैला दुआ जब बीमारी पैदा कर सकता है तो सुगंधित धुआं शरीर को बल भी देता होगा। इसी तारतम्य को ध्यान में रखते हुए अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा परिवार समाज राष्ट्र विश्व के कल्याण हेतु गृहे गृहे गायत्री यज्ञ कार्यक्रम रखा गया है जिला जांजगीर चांपा के संयोजक बिहारीलाल ताम्रकार जी ने अपील किया है कि लोग अपने अपने घरों पर परिवार के साथ इस यज्ञ अभियान को संपन्न करें ताकि हमारा घर परिवार समाज व राष्ट्र सुखी समुन्नत खुशहाल हो सके।

एक नजर

साइबर ठगी के जाल में फंसी महिला की चौंकाने वाली दास्तान, पुलिस ने दर्ज किया मामला

बिलासपुर। छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में साइबर ठगी का एक बेहद चौंकाने वाला मामला सामने आया है। एक महिला को पहले ठगों ने 25 लाख रुपए की लॉटरी लगने का झांसा देकर 9 लाख रुपए अपने अकाउंट में जमा करा लिए। फिर रुपए वापस करने के बदले उसका न्यूड वीडियो मांगा। मजबूरी में महिला ने वीडियो भेजा तो ठगों ने और 5 लाख रुपए मांगे। जब रुपए नहीं मिले तो वह वीडियो उसके पति के नंबर पर भेज दिया।

सरकंडा क्षेत्र की एक हाउसवाइफ के मोबाइल में 23 अप्रैल को अनजान नंबर से कॉल आया] जिसमें उन्हें 25 लाख रुपए लॉटरी लगने का झांसा दिया गया। महिला रुपए पाने के लालच में आ गई। इस दौरान उससे 25 लाख रुपए पाने के लिए प्रोसेस फीस, टैक्स सहित अलग-अलग बहाने से रुपए जमा कराए गए। महिला ने अपने व पति के बैंक अकाउंट से ऑनलाइन ट्रांजेक्शन किया। उसने करीब 9 लाख रुपए ठगों के अलग-अलग अकाउंट में ट्रांसफर कर दिए। इसके बाद भी उन्हें लॉटरी की रकम नहीं मिली। महिला ने यह बात अपने पति को भी नहीं बताई। पति से उसने कुछ पैसे झूठ बोलकर जमा करा लिए तो कुछ खुद ही उनके एकाउंट से जमा कराए।

महिला ने वापस मांगे रुपए

महिला को संदेह हो गया कि वह ठग ली गई है। उसे तो 25 लाख मिले ही नहीं और ठग और रकम की डिमांड करने लगे। झांसा दिया गया कि उनकी पूरी जमा राशि उन्हें बाद में लौटा दी जाएगी। तब महिला ने बताया कि उनके अकाउंट में अब पैसे ही नहीं है।

फिर मंगवाया न्यूड वीडियो

महिला ने जब और रुपए देने से इनकार किया तो ठगों ने उनके सामने शर्त रखी। महिला से बोला गया कि अपना न्यूड वीडियो बनाकर दो, तब पूरे 9 लाख रुपए वापस मिल जाएंगे। महिला उनके चंगुल में फंस गई थी। वीडियो भेजने पर रकम वापसी की उम्मीद थी। लिहाजा, महिला ने अपना न्यूड वीडियो बनाकर ठग को भेज दिया।

पति के पास भेजा वीडियो और मांगे पांच लाख रुपए

इसके बाद भी ब्लैकमेलिंग का सिलसिला नहीं रुका। जालसाजों ने महिला से उसके पति का मोबाइल नंबर पहले ही ले लिया था। लिहाजा पति के मोबाइल पर पत्नी का न्यूड वीडियो भेजकर धमकाना शुरू कर दिया। पति से पांच लाख रुपए की मांग की गई। रुपए नहीं देने पर वीडियो को सोशल मीडिया में वायरल करने की धमकी दी गई। पति ने महिला से पूरी जानकारी ली। तब ब्लैकमेलिंग का यह मामला सामने आया। इसके बाद उन्होंने इस घटना की शिकायत पुलिस से की। पुलिस ने केस दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी है।

राजस्व अभिलेखों में हेराफेरी, पटवारी निलंबित

जगदलपुर । राजस्व अभिलेखों में हेराफेरी के कारण भानपुरी में पदस्थ पटवारी उपेंद्र बघेल को निलंबित कर दिया गया है। उपेंद्र बघेल के खिलाफ निलंबन की यह कार्रवाई बस्तर अनुविभागीय अधिकारी (राजस्व) ओमप्रकाश वर्मा द्वारा की गई है। उपेन्द्र बघेल के खिलाफ यह कार्यवाही तोकापाल तहसील के विभिन्न पटवारी हल्कों में पदस्थापना के दौरान शासकीय और नि भूमि में की गई हेराफेरी के कारण की गई है। निलंबन आदेश के अनुसार पटवारी उपेन्द्र बघेल द्वारा पटवारी हल्का नंबर 15 मावलीभाटा स्थित खसरा नंबर 154 रकबा 3.28 हेक्टेयर पहाड़ चट्टान मद की भूमि को आसमन पिता आयतु जाति माड़िया के नाम पर दर्ज कर दिया गया है। पटवारी हल्का नंबर 15 मावलीगुड़ा के ग्राम गुर्रम स्थित भूमि जिसका खसरा नंबर 223 224, 225, रकबा कमश: 0.42, 2.19, 0.99 हेक्टेयर की शासकीय भूमि छोटे झाड़ के जंगल मद में दर्ज भूमि को कमश: कमल नाग पिता मोती नाग जाति माहरा, रमेश पिता धनेश्वर, जाति ब्राम्हण एवं बली नागवंशी के नाम पर भूमि स्वामी हक में दर्ज कर शासकीय भूमि का हेरा-फेरी करते हुए भूईया में अंकित कर दिया गया है। इसके साथ ही न्यायालय तहसीलदार, तोकापाल में विचाराधीन राजस्व प्रकरण क्रमांक 2028150900016 / अ-6 / 2019-2020 में आवेदक सूर्यप्रताप सिंह विरूद्ध जोगा पिता देव निवासी ग्राम गुर्रम स्थित भूमि खसरा नंबर 222 / 1 को उपेन्द्र बघेल द्वारा खसरा नंबर 222 / 1ख रकबा 2.00 हेक्टेयर भूमि में सूर्यप्रतापसिंह पिता भगवान दीन सिंह का नाम दर्ज कर दिया गया है ।

तेजी से बढ़ रहा है मानसून

27 मई तक केरल और 7 जून तक छत्तीसगढ़ पहुंचने की संभावना

रायपुर। मौसम विभाग ने बताया है कि दक्षिण-पश्चिम मानसून बंगाल की खाड़ी के कुछ हिस्सों और अंडमान निकोबार द्वीप समूह के अधिकांश भागों से आगे बढ़ रहा है। इसका मतलब है कि यह पहले से अनुमानित समय पर केरल तट तक पहुंच जाएगा। इसी के साथ देश की मुख्य भूमि पर बरसात की शुरुआत होगी। मौसम विभाग ने पहले बताया था, मानसून 27 मई तक केरल तट तक पहुंच जाएगा। ऐसा हुआ तो 7 जून तक छत्तीसगढ़ में मानसून का प्रवेश हो जाएगा।

माना जाता है कि मानसून केरल पहुंचने के 10 दिनों में छत्तीसगढ़ पहुंच जाता है। इस से अनुमान लगाया जा रहा है कि सब कुछ सामान्य रहा तो 6-7 जून तक मानसून छत्तीसगढ़ तक पहुंच जाएगा। उसके अगले चार दिनों में यह पूरे प्रदेश में छा जाएगा। प्रदेश की कृषि और अर्थव्यवस्था के लिए सामान्य मानसून का काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। इसके साथ ही एक बार बरसात शुरू हो गई तो जलती गर्मी से भी लोगों को राहत मिलेगी। मानसून की दस्तक से पहले ही प्रदेश के कई हिस्सो में स्थानीय मौसमी तंत्र की वजह से छिटपुट बरसात जारी है। मौसम विभाग के मुताबिक सोमवार को कटेकल्याण में सबसे अधिक 5 मिलीमीटर बरसात हुई है। केशकाल, छिंदगढ़, मानपुर, गरियाबंद, कुनकुरी और नारायणपुर में भी हल्की वर्षा दर्ज की गई है।

रात में सबसे अधिक बरसात राजनांदगांव में

बीती रात प्रदेश के अधिकांश जिलों में अंधड़ के साथ बरसात हुई। मौसम विभाग ने सबसे अधिक 10 मिलीमीटर बरसात राजनांदगांव में दर्ज की है। रायपुर में 7.4, माना में 9.4 और पेण्ड्रा रोड में 8.9 मिलीमीटर बरसात हुई है। वहीं दुर्ग में 5.4 और अंबिकापुर में 1.8 मिमी बरसात रेकॉर्ड हुई।

बौद्ध समाज ने पंचशील के सिद्धांतों का पालन करने का लिया संकल्प

जगदलपुर । बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर बौद्ध समाज द्वारा वेलुवन बुद्ध विहार में सोमवार को गौतम बुद्ध की जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। इस दौरान वेलुवन में हुए गोष्ठी में उनके उपदेशों पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में पहुंचे वरिष्ठजनों ने कहा कि आज दुनिया बुद्ध की राह पर है। यही एक मात्र ऐसे युगदृष्टा हुए जो हमें जीवन की समृद्धि सम्यक दिशा दिखाते हैं। वेलुवन बुद्ध विहार में कार्यक्रम की शुरुआत सुबह 11 बजे पंचशील ध्वजारोहण के साथ किया गया, इसके पश्चात त्रिशरण पंचीशल व धम्म वंदना की गई। इस अवसर पर भगवान गौतम बुद्ध के बताए गए धम्म मार्ग पर चल कर स्वयं का देश का और पूरे संसार का किस प्रकार कल्याण किया जा सकता है, इस पर वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए, महिला मंडल द्वारा उनके जीवनी पर प्रकाश डाला गया। लद्दाख के भन्ते (बौद्ध भिक्षु) द्वारा लाइव प्रसारण कर लोगो को धम्म देशना के साथ ही बुद्ध के मध्यम मार्ग पर किस प्रकार चले इसकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि बुद्ध के उपदेशों में समता, स्वतंत्रता, बंधुत्व के अलावा क्षमाशील और प्रज्ञा का विशेष स्थान है। बोधि ने कहा कि महात्मा बुद्ध का जन्म, ज्ञान प्राप्ति और महापरिनिर्वाण ये तीनों एक ही दिन अर्थात वैशाख पूर्णिमा के दिन ही हुए थे। इस अवसर पर बौद्ध समाज के संरक्षक डीपी अहवाल, समाज के अध्यक्ष पीडी मेश्राम, सचिव कमलेश रामटेके, महाचिव धर्मेंद्र मेश्राम, उपाध्यक्ष कुंदन रामकर, छबिलाल रामटेके, बंसीलाल सहारे, कन्हैया लाल गढ़पाले, संजय वासनीकर, राहुल गोरखेड़े, सतीश लोनहारे, सन्तोष खापर्दे, राकेश रामु गनवीर, केसी गनवीर, महिला मंडल में सुचित्रा रंगारे, वनिता गेडाम स्वाति वासनीकर निर्मला बोरकर, शालू बंसोड़ आदि मौजूद रहे।

छत्तीसगढ़ की जूनियर बालक हॉकी टीम नेशनल हेतु कोविलपट्टी (तमिलनाडु) रवाना

राजनांदगांव। दिनाक 17 से 29 मई 2022 तक कोविलपट्टी (तमिलनाडु) में आयोजित जूनियर बालिका राष्ट्रीय हॉकी चैंपियनशिप हेतु राज्य की हॉकी टीम तमिलनाडु एक्सप्रेस में नागपुर से कोविलपट्टी (तमिलनाडु) के लिए कल 13 मई को रवाना हो गई है ।

छत्तीसगढ़ हॉकी के अध्यक्ष फ़िरोज़ अंसारी के मार्गदर्शन व हॉकी कोच किशोर धीवर एवं रवि राव तथा खुशाल यादव (फिसिकल ट्रेनर)के नेतृत्व में आयोजित कोचिंग कैम्प में खिलाडीयो का चयन उत्कृष्ट खेल प्रदर्शन के आधार पर किया गया है,।

राज्य की जूनियर हॉकी टीम का पहला मैच दिनांक 17 मई 2022 को हॉकी तमिलनाडु के साथ खेला जायेगा ।

छत्तीसगढ़ हॉकी के महासचिव मनीष श्रीवास्तव ने बताया कि उक्त चैंपियनशिप में भाग ले रही राज्य के बालक हॉकी टीम में शामिल खिलाड़ियो में अर्जुन यादव,कुशल यादव, आदित्या नेताम,आदित्या मेश्राम, गुमान साहू, सोमनाथ यादव, अजय तांडी, गौरव नायक,जीतू हेमला, निखिल भोई,ओमकार गुप्ता,सागर सूर्यवंशी, विष्णु यादव,राहुल पन्नू,शुभम यादव,समीर अली,सारिक अहमद,कैलाश कुमार राय, तथा खुशाल यादव (मैनेजर) एम रवि रॉव (कोच) एवं मनीष यादव (सहायक कोच) के रूप में शामिल है। प्रशिक्षण शिविर के समापन अवसर पर जिला हॉकी संघ के सचिव शिवनारायण धकेता,उपाध्यक्ष भूषण साव (हॉकी कोच) कोषाध्यक्ष ज्ञानचंद जैन, गुणवंत पटेल आदी ने अंतरास्ट्रीय हॉकी स्टेडियम राजनांदगांव में उपस्थित होकर खिलाडीयो को राष्ट्रीय चैंपियनशिप में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु शुभकामनाएं दी।

समर कैम्प का पाचवां दिन

429 बच्चे हुए शामिल

गौरेला पेण्ड्रा मरवाही । जिला प्रशासन, स्कूल शिक्षा और खेल विभाग के सौजन्य से आयोजित समर कैंप के पांचवे दिन 429 बच्चे समर कैंप में उपस्थित हुए। कलेक्टर सुश्री ऋचा प्रकाश चौधरी के मार्गदर्शन में ग्रीष्मकालीन अवकाश का सदुपयोग करने, बच्चो की प्रतिभाओं को निखारने एवं नवीन कला-कौशलो से लाभान्वित कराने के उद्देश्य से विगत 11 मई से समर कैंप प्रारंभ की गई है। समर कैम्प को लेकर बच्चों में भारी उत्साह है। समर कैंप 20 मई तक चलेगा। आयोजन के पांचवे दिन स्वामी आत्मानन्द शासकीय अंग्रेजी माध्यम स्कूल सेमरा में 302 बच्चों ने विभिन्न गतिविधियों में उत्साह से भाग लिया। समर कैंप सेमरा में डांस, मैथ्स वर्किंग,कैलियाग्राफी, पॉट डेकोरेशन, आर्ट एंण्ड क्राफ्ट, पेंटिंग, सिंगिंग, क्ले मॉडलिंग, अबेकस एवं व्यक्तित्व विकास में भाग लिया। इसी तरह फिजिकल कालेज पेण्ड्रा मैदान में 127 बच्चों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कर कबड्डी, व्हालीबॉल, एथलेटिक्स, खो-खो, ताईक्वांडो एवं कराटे में भाग लिया। समर कैम्प में बच्चो के आयु वर्ग एवं उनके रूचि अनुसार विभिन्न विधाओं में कुशल शिक्षको द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। समर कैम्प के दौरान बच्चो को स्वल्पाहार एवं स्वच्छ पेयजल भी उपलब्ध कराया जा रहा है साथ ही प्रशिक्षको द्वारा बच्चो की सुरक्षा पर भी नजर रख रहे हैं।

भाजपा ने भूपेश सरकार के काला कानून के खिलाफ किया आंदोलन

जोहार छत्तीसगढ़-
सूरजपुर।

भारतीय जनता पार्टी प्रदेश संगठन के आह्वान पर भाजपा जिला सूरजपुर द्वारा भूपेश सरकार द्वारा जारी किए गए काले कानून, रेडी टु इट का काम महिला समूह से वापस लेने युवाओं को रोजगार देने और बेरोजगारी भत्ता देने की मांग को लेकर जेल भरो आंदोलन किया गया। जिसमे हजारों की संख्या में कार्यकर्ताओं एवं महलाओं ने गिरफ्तारी दी।

कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष बाबूलाल अग्रवाल ने कहा कि भूपेश सरकार द्वारा जनमानस की आवाज को कुचलने का प्रयास किया है प्रदेश सरकार घोषणापत्र के झूठे वादे पूरा नहीं कर पा रही है एवं विभिन्न कर्मचारी संगठन महिला समूह युवा समूह एवं राजनीतिक दलों द्वारा अपने शांतिपूर्ण आंदोलन के माध्यम से प्रदेश सरकार से मांग की जा रही है तो आंदोलनों को कुचलने हेतु जनमानस की आवाज को दबाने

ऐसा काला कानून भूपेश बघेल लेकर आए हैं जिसे तुरंत वापस लेना चाहिए, प्रदेश कार्यसमिति भीमसेन अग्रवाल ने कहा कि प्रदेश की महिला समूहों को रेडी टू ईट के माध्यम से रोजगार से जोड़ा गया था एवं रेडी टू ईट की गुणवत्ता भी महिला समूह के हाथों में होने से काफी अच्छी रहती थी परंतु युक्त कार्य को भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ाते हुए प्रदेश की महिलाओं से उस कार्य को वापस लेते हुए बीज निगम के माध्यम से करने का निर्णय निंदनीय है सरकार इस कानून को तत्काल प्रभाव से वापस करें, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य राम कृपाल साहू ने कहा कि प्रदेश सरकार युवाओं को रोजगार भत्ता देने में असफल रही है एवं घोषणा पत्र में किए गए वादे के अनुसार 25 सौ रुपए बेरोजगारी भत्ता भी नहीं दे रही हैं प्रदेश के युवाओं का प्रदेश सरकार के ऊपर ढाई वर्ष का लगभग ?1 लाख से अधिक बेरोजगारी भत्ता बकाया हो गया युवा आज रोजगार की तलाश में पलायन को मजबूर है। उक्त कार्यक्रम में भाजपा जिला अध्यक्ष बाबूलाल अग्रवाल प्रदेश कार्यसमिति सदस्य भीमसेन अग्रवाल प्रदेश मंत्री परमेश्वरी राजवाड़े पूर्व जिलाध्यक्ष राम कृपाल साहू सतनारायण प्रदेश महामंत्री अजय झा राजेश शुक्ला जिला महामंत्री जिला उपाध्यक्ष भूलन सिंह लाल संतोष सिंह अनुप सिन्हा महेश्वर पैकरा रामू गोस्वामी पुष्पा सिंह जिला मंत्री संदीप अग्रवाल अशोक सिंह श्यामा पांडे महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष लक्ष्मी राजवाड़े किसान मोर्चा अध्यक्ष रामकरण साहू युवा मोर्चा अध्यक्ष रविंद्र भारती मंडल अध्यक्ष रामेश्वर वैश्य अजय अग्रवाल मार्तंड साहू सुरेंद्र राजवाड़े नीलू गुप्ता जय प्रकाश उपाध्याय जगमोहन सिंह राजकुमार गुप्ता सुभाष रजवाडे. देवधन बिंझिया, सुनील गुप्ता रामानंद जयसवाल कौशल सिंह दीपेंद्र सिंह चौहान दीपक गुप्ता राजेश्वर तिवारी प्रवीण गुर्जर कपिल पांडे आनंद सोनी अरविंद मिश्रा राजेश साहू दुर्गा शंकर जयसवाल सतनारायण जयसवाल अमिर चंद गुप्ता शांति सिंह सुमन सिंह सरोज साहू नूतन विश्वास अर्जुन कुशवाहा बसंत कुशवाहा भोला शंकर साहू भुनेश्वर साहू शिवशंकर साहू सूरत सेट्ठी यशवंत सिंह राजेश साहू सावन गोयल प्रकाश दुबे दुर्गा गुप्ता किशन देवांगन दौलत सिंह सहित सभी मोर्चा एवं प्रकोष्ठ के कार्यकर्ता भारी संख्या में उपस्थित रहे।

ओंगना के घुमनारा जंगल में हाथी मौजूद

तेंदूपत्ता तोड़ने गई महिलाओं को वनकर्मी व हाथी मित्रदल सुरक्षित जंगल से बाहर निकालने में जुटे

जोहार छत्तीसगढ़–धरमजयगढ़।

धरमजयगढ़ क्षेत्र के ओंगना घुमनारा जंगल मे हांथियों की मौजूदगी को देखते हुए सुरक्षा की लिहाज से जंगल मे तेंदू पत्ता संग्रहण करने गई महिलाओं को समझाईस देते हुए जंगल से बाहर निकाला जा रहा है इस दौरान संबंधित वनकर्मी एवं हाथी मित्रदल के सदस्य तेंदूपत्ता सरकारी वाहन में बैठा कर जंगल से बाहर लेकर आ रहे है क्योंकि बताया जा रहा है घुमनारा के जंगल मे एक से ज्यादा के तादाद में हाथी मौजूद है जिनमे नर हांथी शामिल है जो काफी आक्रामक है किसी भयंकर खतरे से कम नहीं है ऐसे में तेंदूपत्ता के लिए लोगों का जंगल के अंदर जाना खतरे से खाली नही है हाथी से किसी की मुठभेड़ न हो और किसी तरह अनहोनी घटना घटित न हो इस नजरिए से लोगों को जंगल से सुरक्षित बाहर निकाला जा रहा है ताकि लोगों की सुरक्षा बनी रहे।

धरमजयगढ़ को जिला बनाने जनता एवं जनप्रतिनिधि चुप क्यों ?

जोहार छत्तीसगढ़–धरमजयगढ़।

जब मध्यप्रदेश से छत्तीसगढ़ अलग राज्य बना तब 16 जिले थे। जो बढ़कर अब छत्तीसगढ़ में 33 प्रशासनिक जिले हो गए हैं। मध्य प्रदेश से अलग होने के समय, छत्तीसगढ़ में मूल रूप से 16 जिले थे। 11 मई 2007 को दो नए जिले बीजापुर और नारायणपुर बनाया गया। जिसके बाद 1 जनवरी, 2012 को और 9 नए जिलों को बनाया गया था।

नए जिलों को अधिक लक्षितए केंद्रित और करीबी प्रशासन की सुविधा के लिए मौजूदा जिलों को तोड़कर बनाया गया है। इन जिलों में सुकमा, कोंडागांव, बालोद, बेमेतरा, बलौदा बाजार, गरियाबंद, मुंगेली, सूरजपुर और बलरामपुर शामिल है। 10 फरवरी 2020 को गौरेला,पेंड्रा मरवाही जिले का उद्घाटन किया गया। 15 अगस्त 2021 को चार और नए जिले मनेंद्रगढ़, मानपुर मोहला, शक्ति और सारंगढ़ बिलाईगढ़ की घोषणा की गई थी। वहीं पिछले माह हुए खैरागढ़ उपचुनाव में मुख्यमंत्री ने विधायक जिताने पर खैरागढ़ को जिला बनाने की बात कही थी। जिसका अच्छा नतीजा आया और खेरागढ़ से कांग्रेस प्रत्याशी ने अच्छे मतों से जीत हासिल किया। जिसपर मुख्यमंत्री ने खेरागढ़ को जिला बनाने की घोषणा कर दी। 16 से 33 जिले के सफर में भी पत्थलगांव का नाम नहीं आने से क्षेत्र की जनता निराश हो गई। लेकिन एक बार फि र से पत्थलगांव में जिले की मांग को लेकर आंदोलन की शुरूआत होती दिखाई दे रही है। लेकिन धरमजयगढ़ क्षेत्र की जनता एवं जनप्रतिनिधि अभी भी चुप बैठे हुए हैं। सत्तापक्ष एवं विपक्ष दोनों पार्टी जिले की मांग को लेकर शांत है। जबकि धरमजयगढ़ को जिला बनने में सभी स्थिति अनुकूल है। अविभाजित रायगढ़ जशपुर जिले के समय यहां जिला शिक्षा कार्यालय था। वर्तमान में वनमण्डलाधिकारी कार्यालय का होनाए जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान का धरमजयगढ़ में होना। ऐसे अनेक उदाहरण हैं जो धरमजयगढ़ को जिला के लिए अनुकूल बनाते हैं। बता दें कि 2003 एवं 2008 के चुनाव में भाजपा को जीत मिली थी। बाकी समय में यहां कांग्रेस का ही कब्जा है। पत्थलगांव में भी कांग्रेस का ही राज हैए एक पंचवर्षीय में भाजपा को जीत मिली थी।

आगामी विधानसभा चुनाव को देखते हुए पत्थलगांव क्षेत्रवासियों द्वारा जिला बनाने की मांग की जाने लगी है। लगता है धरमजयगढ़ वासी तो दिनों दिन घटते क्रम में ही खुश हैं। क्योंकि यहां से अनेक कार्यालय उठकर चले गए। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान भी जाने की पूरी तैयारी में थी। लेकिन जैसे तैसे करके बच गई है। धरमजयगढ़ के कई बुद्धिजीवीयों का मानना है कि जब जिला बनेगाए उदयपुर के नाम से बनेगा। सरकार पत्थलगांव एवं धरमजयगढ़ क्षेत्र की जनता को खुश करने उदयपुर जिला बनाएगी। जिसका लाभ धरमजयगढ़ क्षेत्रवासियों को मिलेगा।

अवैध काले हीरे के कारोबार पर पुलिस की ताबड़तोड़ कार्यवाही

फिर ढ़ाई टन कोयला सहित 1 गिरफ्तार

जोहार छत्तीसगढ़–सूरजपुर,.

पुलिस अधीक्षक रामकृष्ण साहू ने जिले में अवैध कारोबार पर पूर्णत: अंकुश लगाने के सख्त निर्देश के बाद निरंतर कार्यवाही जारी है। दिनांक 15. मई 2022 को थाना प्रतापपुर पुलिस को मुखबीर से सूचना मिला कि जगरनाथपुर से पिकअप वाहन क्रमांक सीजी 14 एमसी 9813 का चालक पिकअप में कोयला लोड़ कर ईट भट्ठा में खपाने के लिए राजपुर की ओर जा रहा है। अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक हरीश राठौर व एसडीओपी प्रतापपुर अमोलक सिंह के मार्गदर्शन में थाना प्रतापपुर की पुलिस ने ग्राम बुढ़ाडांड में पिकअप वाहन को घेराबंदी कर रोकवाया जिसकी तलाशी लेने पर उसमें कोयला लोड़ पाया ड्राईवर संतोष गुप्ता पिता राजकुमार गुप्ता उम्र 30 वर्ष निवासी भदार, थाना राजपुर, जिला बलरामपुर से कोयला खरीदी बिक्री का दस्तावेज मांगने पर कोई दस्तावेज पेश नहीं किया गया। पिकअप में लोड़ कोयला चोरी का होने की पूर्ण अंदेशा पर ढ़ाई टन कोयला कीमत 20 हजार रूपये एवं परिवहन में प्रयुक्त पिकअप वाहन कीमत 5 लाख रूपये को जप्त कर धारा 41(1-4)जा.फौ./379 भादस के तहत कार्यवाही करते हुए आरोपी को गिरफ्तार किया गया। इस कार्यवाही में एसआई राजेश तिवारी, नवल किशोर दुबे, एएसआई बजरंगी लाल चौहान, प्रधान आरक्षक महेन्द्र पटेल, आरक्षक अभय तिवारी, अरविन्द पाण्डेय व मैडीराज सक्रिय रहे।

एक नजर

कु. रोशनी कश्यप ने 5 वां स्थान प्राप्त किया

जोहार छत्तीसगढ़–जांजगीर।

कु.रोशनी कश्यप पिता सत्यनारायण कश्यप कक्षा 10वीं स्कूल रेवाराम कश्यप उच्च माध्यमिक विद्यालय पौना संकुल तागा विकासखंड अकलतरा परीक्षा वर्ष 2022 में 600 में 580 अंक 96.67 प्रतिशत के साथ जांजगीर जिला में 5 वां स्थान प्राप्त किया।

बावनपरियों के साथ दांव लगाते तीन पकड़ाए

जोहार छत्तीसगढ़–धरमजयगढ़।

छाल पुलिस ने जुआ खेल रहे तीन जुआड़ियों को पकड़ा है। पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर जुआ, सट्टा खेलने वालों पर कड़ी कार्यवाही जारी है। थाना प्रभारी के मार्गदर्शन छाल पुलिस ने ग्राम बरभौना गुरदा जंगल मार्ग में जाकर में जुआ खेल रहे गिरधारी डनसेना पिता विसम्भर 38 वर्ष निवासी बरभौना, ऋषिकुमार डनसेना पिता गंगाराम निवासी बरभौना, आनन्द कुमार राठिया पिता पतंग सिंह निवासी कुकरीचोली थाना छाल को आम जगह पर रूपये का दांव लगाकर हार जीत काटपत्ती जुआ खेलते हुए पकड़ा है। फड से 5 सौ रुपये तथा उनके पास से 8 सौ रुपये कुल एक हजार तीन सौ रूपये जप्ती किया गया है। मौके पर 52 पत्ती तास तथा एक प्लास्टिक का पुराना बोरी जप्त किया गया। कुछ जुआ खेलने वाले कुछ अज्ञात व्यक्ति जंगल की ओर भाग गये। धारा 13 जुआ अधिनियम का अपराध पाये जाने पर मामला दर्ज कर विवेचना में लिया गया है।

समाज के विकास के लिए वनांचल में शिक्षा के उजियारा को फैलाना होगा -कवासी लखमा

संभागीय गोंडवाना सम्मेलन में शामिल हुए आबकारी एवं उद्योग मंत्री लखमा

बीजापुर । जिले के ग्राम मूसालूर में आयोजित संभागीय गोंडवाना सम्मेलन के समापन के अवसर पर समाज के पदाधिकारियों और सदस्यों द्वारा लोक नृत्य एवं बाजे-गाजे के साथ अतिथियों का उत्साहपूर्वक स्वागत किया। वहीं अतिथियों ने क्षेत्र के देवी-देवताओं तथा देव विग्रहों की पूजा-अर्चना कर समाज के खुशहाली एवं समृद्धि का आर्शीवाद मांगा। इस मौके पर आबकारी एवं उद्योग मंत्री कवासी लखमा क्षेत्रीय विधायक एवं उपाध्यक्ष बस्तर विकास प्राधिकरण विक्रम मंडावी, पूर्व सांसद एवं समाज के प्रदेश पदाधिकारी सोहन पोटाई, गोंडवाना समाज के प्रदेश पदाधिकारीगण, समाज के नव निर्वाचित संभागीय अध्यक्ष सुमेर सिंह नाग, समाज के सभी जिलों के जिला अध्यक्ष एवं अन्य पदाधिकारी तथा बड़ी संख्या में समाज के सदस्य उपस्थित थे। इस दौरान विधायक केशकाल एवं उपाध्यक्ष बस्तर विकास प्राधिकरण संतराम नेताम ने संभागीय गोंडवाना महासभा के नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को समाज की सेवा करने हेतु शपथ दिलाया और उन्हे बधाई एवं शुभकामनाएं दी। समाज के संभागीय महासचिव सदेसिंह कोमरे ने सम्भागीय सम्मेलन का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

कमर में बंदूक लटकाए सिविल ड्रेस में डांस करते थानेदार का विडियो वायरल

सुकमा। सुकमा जिले के दोरनापाल थाने के थानेदार का 16 सेकंड का वीडियो इन दिनों सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहा है जिसमें थानेदार अपनी कमर पर तमंचा लटकाये युवतियों के साथ स्टेज पर डांस कर रहे है।

मामला सुकमा जिले के दोरनापाल का है जहां एक विडियों में थानेदार सुरेश जांगड़े अपनी कमर में तमंचा लटकाकर युवतियों के साथ स्टेज पर डांस करते नजर आ रहे हैं। बताया जा रहा है कि यह वीडियो दो सप्ताह पुराना है, लेकिन इन दिनों यह वीडियो सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहा है। ज्ञात हो कि लगभग दो सप्ताह पहले दोरनापाल इलाके में एक मेला आयोजित किया गया था, जिसमें डांस का प्रोग्राम भी रखा गया था। इस मेले में थाना पुलिस बल कि ड्यूटी लगी हुई थी। जहां थानेदार भी पहुंचे थे। इसी बीच सिविल ड्रेस में ड्यूटी कर रहे थाना प्रभारी अचानक डांस के बीच स्टेज पर चढ़ गए और कमर में तमंचा लटकाए हुए भोजपुरी गाने पर पर थिरकने लगे। अचानक थाना प्रभारी को डांस करता देख आसपास के लोगों ने इसका वीडियो अपने कैमरे में कैद कर लिया, जिसके बाद इन दिनों यह वीडियो सोशल मीडिया में जमकर वायरल हो रहा है।

बुद्ध की 2566 वीं जयंती पर की गई सामूहिक वंदना

गरियाबंद । विश्व को करुणा, मैत्री, शांति, अहिंसा, समता, बंधुता, न्याय और स्वतंत्रता का संदेश देने वाले कारुणिक तथागत बुद्ध की जयंती व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया इस अवसर पर आंबेडकर नवयुवक मंडल,भारतीय बौद्ध महासभा,के तत्वावधान में सोमवार को शाम 5 बजे बुद्ध विहार गरियाबंद में तथागत भगवान बुद्ध की 2566 वी जयंती हर्ष और वैचारिक स्तर पर मनाई गई इस अवसर पर देवभोग रोड स्थित प्रस्तावित बौद्ध विहार में ध्वज व पंचशील धम्मध्वज का ध्वजारोहण कर सामूहिक रूप से बुद्ध वंदना ली गई। और साथ ही खीर का वितरण भी किया गया

हाथी समस्या से कब होगा उद्धार,जनता करने लगी पुकार

जोहार छत्तीसगढ़–धरमजयगढ़।

वन मण्डल धरमजयगढ़ क्षेत्र में हाथी को दस्तक दिए दो दशक हो गया। जिसके बाद दिनों दिन संख्या बढ़ती ही जा रही है। संख्या बढ़ने से समस्या बढ़ती जा रही है। वनांचल क्षेत्र के लोगों का तो अब रात दिन जीना दूभर हो गया है। क्योंकि रात को ही नहीं बल्कि दिन में भी रहवास क्षेत्र एवं आवागमन मार्ग में निकल आते हैं।

जिससे लोगों में भय का माहौल निर्मित होते जा रहा है। वहीं फसल नुकसान की खबर तो आम हो गई है। प्रतिदिन कहीं न कहीं से फसल नुकसान की सूचना मिलती रहती है। कई बार तो जनहानि भी हुई है। अबतक हाथियों ने सैकड़ों लोगों की जान ले ली है। वनांचल क्षेत्र के लोगों के लिए वन संपदा आय का बहुत बड़ा साधन होता है। चार-चिरौंजी,गोंद, महुआ, तेंदूपत्ता प्रमुख रूप से हैं। लेकिन हाथियों के कारण लोगों को जंगल जाने से मना किया गया है। शासन द्वारा अभी तक हाथी समस्या के समाधान के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया है। शुरुआत में आए हाथी को पकड़कर अन्यत्र ले जाने के लिए शासन ने एलिफेंट एक्सपर्ट पार्वती बरुआ को जिम्मेदारी सौंपी थी। लेकिन यह कार्यक्रम भी पूरी तरह फैल हो गया। वन विभाग द्वारा कुछ साल पहले करोड़ो रूपये खर्च कर जंगलों को सौर ऊर्जा फेंसिंग तार से घेराव किया गया था। लेकिन इससे कोई राहत नहीं मिला। शासन द्वारा जंगलों में हाथियों के लिए भोजन की व्यवस्था की गई। पिछले साल तो धान के बोरी को जंगलों भोजन के लिए रखा गया। लेकिन इससे भी समस्या का कोई समाधान नहीं दिखाई दिया। शासन द्वारा हाथी की समस्या के समाधान के लिए लेमरू एलिफेंट कॉरिडोर बनाने की चर्चा कई वर्षों से चल रही है। लेकिन अभी तक धरातल पर कुछ होता नहीं दिख रहा है। लग रहा है कि यह योजना भी टांय टांय फिस्स हो होने वाली है। पहले तो ज्यादा जंगल क्षेत्र के गांवों को ही हाथी की समस्या थी। लेकिन अब तो जंगल छोड़कर मैदानी क्षेत्रों में भी विचरण करने लगे हैं। कई बार तो एनएच मुख्य मार्ग में भी दिन को हाथी विचरण करते देखा जा सकता है। जंगल क्षेत्र के किसान तो अब खेती को छोड़ने के लिए मजबूर हो रहे हैं। क्योंकि कड़ी मेहनत करके उगाये फसल को चन्द मिनटों में हाथियों का झुंड नुकसान पहुंचा देते हैं। शासन द्वारा मुआवजा का भी प्रावधान है लेकिन वह ऊंट के मुंह में जीरा वाली कहावत को चरितार्थ करती है। उसके लिए भी कई बार किसानों को वन विभाग कार्यालय का चक्कर लगाना पड़ता है। कई किसान तो चक्कर लगाने की डर से मुआवजा प्रकरण नहीं बनवाते हैं। बता दें कि इस क्षेत्र में कई हाथियों की असमायिक मौत भी हुई है। जिसमें ज्यादातर हाथियों की मौत विद्युत करंट लगने से हुई है। जिससे भी कई किसानों को जेल की हवा खानी पड़ी है। किसान खेती करने के लिए अपने विद्युत चलित पम्पों का उपयोग करता है। जिसके चपेट में आने से हाथियों कि मौत हो जाती है।

10 वीं की परीक्षा में फेल होने पर छात्र ने लगाई फांसी

जोहार छत्तीसगढ़–लैलूंगा।

जिले के पुलिस थाना लैलूंगा के अंतर्गत ग्राम पंचायत लमडांड के आश्रित ग्राम कहरचुंआ से आ रही है। जहां एक छात्र ने परीक्षा में फेल होने के कारण फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया है। यह घटना को कोटवार सेतराम चौहान ने लैलूंगा थाना में उपस्थित होकर मौखिक मर्ग इंटीमेशन कराया कि कोटवार का भतिजा राकेश सिदार अमरदीप हाई स्कूल लैलूंगा में कक्षा 10 वीं की पढ़ाई करता था। एवं वर्ष 2022 में कक्षा 10 वीं की परीक्षा दिया था। जो कि 10 वीं परिक्षा का परिणाम 14 मई को घोषित हुआ एवं परीक्षा परिणाम अपने मोबाईल से देखने पर वह फेल होने से बहुत दु:खी होकर 14 मई के दोपहर 3 बजे घर से कहीं निकला था जो कि शाम होते तक घर वापस नहीं आया। परिजनों मित्रों ने मोबाईल फोन से फोन लगा कर देखे परन्तु मोबाईल फोन में रिंग जा रहा था। लेकिन मोबाईल फोन नहीं उठाने से सम्पर्क नहीं हो सका और 15 मई को आस-पास के गांव में लोगों से पूछताछ कर पता तलाश किया गया। लेकिन रात 8 बजे तक कहीं पता नहीं चलने पर रात करीब 11 बजे मोबाईल लोकेशन से पता किया गया तब लोकेशन के माध्यम से मरघटी पतरा कहरचुंआ तरफ गये तो गांव के मुकेश सिदार को देखा गया जो कि पैरा के बटिया रस्सी से आम पेड़ के डगाल में फांसी लगाकर आत्महत्या कर लिया था। बताया जा रहा है कि मृतक कि मृत्यु 10 वीं में अनुतीर्ण होने से आत्म ग्लानी में छुब्ध होकर फांसी लगाकर आत्म हत्या किया है। वहीं परिजनों की रिपोर्ट पर मर्ग कायम कर जांच पंचनामा में लिया गया है। फिलहाल शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है।

आंधी-तूफान से धाराशायी हुए बांस के पेड़ों में दबकर एक की मौत,एक घायल

सरगुजा । छत्तीसगढ़ के सरगुजा जिले में स्थित सीतापुर में तेज आँधी और पानी के चलते बांस के पेड़ जड़ से उखड़कर ग्रामीणों पर गिर गया जिससे एक की मौत हो गई वहीं दूसरा गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। मिली जानकारी के अनुसार सीतापुर में तेज आँधी और पानी से बचने दो ग्रामीण बाँस के पेड़ों के नीचे जाकर खड़े हो गए थे। इसी दौरान तेज हवा के कारण बांस का पेड़ जड़ से उखड़कर गिर गए जिससे दोनों ग्रामीण दबकर बुरी तरह घायल हो गए। घटना के बाद आसपास के लोगों ने दोनों घायलों को उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचाया जहां डॉक्टर ने स्वास्थ्य परीक्षण के बाद ग्राम प्रतापगढ़ दर्रीपारा निवासी कमल साय उम्र 50 वर्ष को मृत घोषित कर दिया।

एआईआईटी कॉलेज घरघोड़ा में कार्यालय प्रमुख का भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गई

जोहार छत्तीसगढ़–घरघोड़ा।

कुछ लोग ऐसे होते हैं जो गरीब परिवार में जन्म लेकर भी बहुत ही कम समय में अपने ईमानदारी व्यवहार, शिष्टाचार, कर्तव्यनिष्ठता व विनम्रता से हजारों के दिलों में राज कर लेते हैं।

किंतु अपने ईमानदारी से प्यार करना भी ऐसे भावुक इंसान के लिए खतरनाक साबित हो जाता है। ऐसे ही एक युवक था खगेश्वर चौहान जो कि मात्र 21 वर्ष के एक छोटी सी उम्र में छात्र जीवन के साथ-साथ अपने मेहनत लगन व ईमानदारी के बल पर एक प्रतिष्ठित तकनीकी महाविद्यालय में जहां इन्होंने पढ़ाई करने गया था। उसी महाविद्यालय एआईआईटी कॉलेज घरघोड़ा में कार्यालय प्रमुख का जिम्मेदारी निभाने लग गया और देखते ही देखते हजारों लोगों के हृदय में ऐसा जगह बना लिया कि उसे भुला पाना किसी के लिए भी सम्भव नहीं होगा। एआईआईटी कॉलेज घरघोड़ा के इस महान मेधावी छात्र के भावुकता के कारण इनका अप्रत्याशित रूप से 12 मई 2022 को परमधाम गमन हो गया। एआईआईटी कॉलेज घरघोड़ा में जब श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हुआ तो सभी छात्र-छात्राओं,दोस्तों व समस्त कर्मचारियों व महाविद्यालय के डॉयरेक्टर सहित सभी का रो-रो कर बुरा हाल हो गया। इनके याद में दो शब्द बोलना मुश्किल हो गया आंखों से किसी का आंसू थिरक नहीं रहा था जुबान से शब्द बाहर नहीं आ पा रही थी अत्यंत गमगीन माहौल में अपने सबसे प्यारे लाडले खगेश्वर को अश्रूपूरित भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित किया गया।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक नारायण बाईन, द्वारा आसमा पब्लिसर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड,जयस्तंभ चौक रायपुर से मुद्रित कर मेडरमार कालोनी, जिला-रायगढ़ (छत्तीसगढ़) से प्रकाशित।
संपादक -**नारायण बाईन,** फोन -फैक्स 07766299001, मो, 9479177711, 7489419194 Email-joharchhattisgarh@gmail.com, joharchhattisgarh@yahoo.co.in